Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

# शास्त्र और शास्त्र

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

# तालिका

## लेख


भगवान परशुराम, शस्त्र और शास्त्र के संगम ... ४
वेदों में विज्ञान —आचार्य मेघराज ... ९
भगवान परशुराम शारीरिक शिक्षा कालेज ... १७
सोवियत संघ में भक्ति साहित्य —प्रो० साजानोवा ... १९
सोवियत समाचार पत्र —रा०व० ओझा ... ४१


## कथा–कहानी


१८ फरवरी —सुबोध कुमार ... १२
इंतकाम की भावना —अब्दुल गफ्फार छीपा ... ३५


## भेंट वार्ता


युवाओं में असंतोष ... २६
गसी चित्रकार से भेंट ... २९


## कविता


गजल —सलाम मछलीशहरी ... ८
सांचे —प्रमोद शर्मा ... ४६


## स्तंभ


सम्पादक की कलम ... २
फिल्म चर्चा ... २२
आपकी बात ... ३१
भविष्य फल ... ३३
महिला जगत ... ३८
आपका निजी पृष्ठ ... ४७


## श्रद्धांजलि

हिन्दी के अन्तरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त, राष्ट्रकवि श्री रामधारी सिंह 'दिनकर' काल की अकृपा से हमारे बीच नहीं रहे। दिनकर जी अपने जीवन में शस्त्र और शास्त्र दोनों के गायक रहे। वह भगवान परशुराम के व्यक्तित्व के बड़े प्रशंसक थे। १९६२ में जब चीन ने हमारे देश पर आक्रमण किया था, उन्होंने "परशुराम की प्रतीक्षा" शीर्षक से काव्य पुस्तिका लिखी थी। उनके हृदय में परशुराम बहुत गहरे पैठे होगें, इसलिए युगादि तिथि (परशुराम जयंती) अक्षय तृतीया को ही उन्होंने इस लोक से सदा-सदा के लिए प्रस्थान किया। "शस्त्र और शास्त्र" परिवार दिनकर जी को सादर श्रृद्धांजलि अर्पित करता है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

# शस्त्र और शास्त्र

(युवक, युवतिया का मासिक पत्र)

वर्ष १ अंक १ जून, १९७४

स्नेह—सौजन्य :
श्री हरिदत्त शर्मा

परामर्शक :
श्री महावीर अधिकारी
श्री ब्रजमोहन
श्री शिवानन्द नौटियाल
श्री शशि भूषण

सम्पादक :
नीरजकुमार शर्मा

सहायक :
अजय कुमार 'अजय'

अवैतनिक व्यवस्थापक :
श्री भागीरथलाल भारद्वाज
श्री सीताराम शर्मा
श्री न्यौराम शर्मा

संपादकीय पता—
२१/१, शक्ति नगर,
दिल्ली—७

## शस्त्र और शास्त्र

जहां शस्त्र बल नहीं,
शास्त्र पछत ते या रोते हैं।
ऋषियों को भी सिद्धि,
तभी तप से मिलती है,
जब पहरे पर स्वयं
धनुर्धर राम खड़े होते हैं।

— 'दिनकर'

चन्दा

एक प्रति : १ रुपया
तिमाही : २·५० रुपया
छमाही : ५·०० रुपया
वार्षिक : १०·०० रुपया

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai



# हमारा निवेदन

## महत्व "शस्त्र और शास्त्र" का तब और अब

**मनुष्य** को प्रकृति से अपने अस्तित्व केलिए संघर्ष करते-करते बुद्धि और पौरुष या पराक्रम की आवश्यकता पड़ी। बौद्धिक संघर्ष में उसे संस्कृति, साहित्य, शास्त्र और विज्ञान प्राप्त हुआ और शारीरिक संघर्ष में उसे औजार, तकनीक एवं शस्त्रास्त्र प्राप्त हुए। जंगलों और पहाड़ों को अपने रहने के योग्य बनाने के लिए सामूहिक रूप से मनुष्य समुदाय निरंतर ही शस्त्र और शास्त्र प्राप्त करता आ रहा है। लाखों वर्षों की जद्दोजहद के बाद मनुष्य यह कह सकता है कि वह सभ्य बन गया है लेकिन अभी तक सभ्यता उस स्थिति को प्राप्त नहीं हुई कि जहां वह बिना शस्त्रों के रह सके। आज भी दुनिया में जहाँ तहाँ, छोटे-मोटे स्तर पर ही सही, लड़ाइयां चलती हैं और भविष्य के लिए उनके बड़े स्तर पर चलने की संभावना बनी रहती है। सोवियत संघ और संयुक्त राज्य अमेरिका दोनों ही आज के शस्त्रास्त्रों की भयानकता को देखते हुए शांति चाहते हैं और इसके लिए वे चेष्टा भी कर रहे हैं। लेकिन दो विभिन्न सामाजिक-राजनीतिक प्रणालियों और मानवीय मतभेदों के कारण लड़ाई उनके लिए एकदम वर्ज्य नहीं हुई है।

अपने देश के संदर्भ में जब हम सोचते हैं तो हम यह पाते हैं कि अन्य देशों की तरह हमारा समाज भी शस्त्र और शास्त्र की मर्यादा को लेकर चलता रहा है। जिस-जिस काल में हम दोनों के संतुलन को भूले हैं उसी-उसी समय हमें विदेशी आक्रमणकारियों से आक्रांत होना पड़ा है।

सैकड़ों साल की गुलामी से मुक्त



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

होकर आजादी के बाद हमने इन दोनों के संतुलन को जब भुलाया तो हमें चीन के आक्रमण के सामने लज्जित होना पड़ा। उस समय हमारे देश के तत्कालीन प्रधानमंत्री स्व० जवाहरलाल नेहरू ने कहा था कि शस्त्रास्त्र अथवा सैन्य शक्ति की महत्ता को हम भुठलाकर नहीं चल सकते। तब हमारे देशवासियों ने यह महसूस किया कि शस्त्रों से शास्त्रों की और शास्त्रों से शस्त्रों की और शस्त्र और शास्त्र दोनों से देश की रक्षा के रक्षा के नियम को भुलाकर हम चल नहीं सकते।

हमारी अपनी सभ्यता के विकास मान चरणों में भगवान परशुराम ने शस्त्र और शास्त्र के संतुलतन से सांस्कृतिक, सामाजिक और राजनीतिक विकास की मान्यता को अपने ही उदाहरण से प्रतिष्ठापित किया था। इसके बाद महामतिमान चाणक्य ने इन दोनों के संतुलन के महत्व को समझ कर तद्नुरूप व्यवस्था लागू की और ऐतिहासिक पुरुष बन गये। महाकवि, सांस्कृतिक मनीषि और चिंतक इस मान्यता को जनमानस में स्थापित करने का लगातार यत्न करते रहे। देश को जब तक यह शिक्षा याद रही तब तक हमारा समाज फलता फूलता रहा और आगे बढ़ता रहा। और जब इस शिक्षा का महत्व उसके दिमाग से ओझल हो गया तब उसके कष्टों की गाथा शुरू हो गयी, ऐसी गाथा जिसमें वह सारे अपनेपन को ही भूल गया।

शस्त्र और शास्त्र दोनों से संबंधित अनेकानेक विद्याओं का यह तकाजा है कि हमारे देश को शारीरिक, मानसिक और आत्मिक विकास के लिए भरपूर यत्नशील रहना चाहिए। दुर्बल और निर्बल शरीर व्याधियों का घर बन जाता है। सबल शरीर सबल आत्मा का मंदिर होता है। तन मन और बुद्धि के सामर्थ्य से ही जीवन फूल के रूप में विकसित होता है। इसीलिए हमारे यहाँ संस्कृति को तन-मन-वचन और कर्म के समुचित समन्वित विकास के रूप में देखा गया है।

"शस्त्र और शास्त्र" के माध्यम से उसी परम्परागत समन्वित विकास के संदेश को लेकर हम समाज के पास पहुंच रहे हैं। हमें आशा ही नहीं पूरा विश्वास है कि हमारा समाज इस संदेश को पूरी तरह ग्रहण करके राष्ट्रीय गौरव के विकास में अपना योगदान करेगा।

नीरजकुमार शर्मा



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

# भगवान परशुराम

भगवान परशुराम शस्त्र विद्या में जितने निपुण थे, उतने ही शास्त्रों के विद्वान भी। हमारे धर्म ग्रंथों में उनके व्यक्तित्व की चर्चा में यह आता है कि उनके एक हाथ में परसा दूसरे में तीर-कमान तथा अन्य हाथों में चारों वेद सुशोभित हैं। उनका महान-पूज्यनीय व्यक्तित्व हमें यह शिक्षा देता है कि जीवन में जितना जरूरी बौद्धिक बल है उतना ही शारीरिक शक्ति का महत्व है।

—सं०

**परशुराम** का नाम लेते ही प्रत्येक व्यक्ति के मस्तिष्क में उस क्रोधी सन्यासी स्वरूप की छवि आ जाती है जो सीता-स्वयंवर में राम के द्वारा शिव धनुष के तोड़ते ही आ धमकता है। शिव भक्त परशुराम अपने इष्ट के धनुष का अपमान सहन नहीं कर पाते हैं और अपना परसा उठाकर राम को मारने को तत्पर हो जाते हैं। इसके बाद तीव्र रूप में हुए हैं तो वे शान्त भाव से राम को अभिवादन करके लौट जाते हैं।

हमारे धर्म ग्रंथों में ऐसा वर्णन है कि परशुराम भगवान विष्णु के अवतार थे। ऐसा कहा जाता है कि नर्मदा नदी के किनारे माहिष्मती नामक नगरी थी वहाँ पर कार्तवीर्य राज्य करता था। उसके पास धन-धान्य, बल-वीर्य किसी बात की कमी नहीं थी। इस ऐश्वर्य ने उसे

## जो शस्त्र और शास्त्र के अद्भुत संगम थे।

में परशुराम-लक्ष्मण संवाद होते हैं। संवाद के दौरान जब परशुराम को यह विश्वास होजाता है कि राम सामाजिक मर्यादा की स्थापना के लिए अवतरित ने उसे घमंडी बना दिया और वह साधु संन्यासियों को सताने लगा। कहा जाता है कि एक बार वह अपने सोने के विमान में बैठ कर स्वर्ग पहुंच



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गया तथा वहां चित्ररथ उद्यान में इन्द्र तथा उनकी पत्नी की क्रीड़ा को भंग करके, इन्द्र का भी अपमान किया। एक युद्ध में रावण को भी उसने पराजित किया था। इस प्रकार उसने तीनों लोकों में दमन तथा अत्याचार का डंका बजाया हुआ था। तब देवताओं तथा ऋषियों को भगवान विष्णु ने आश्वासन दिलाया था कि वे 'परशुराम' के रूप में आकर दुष्ट कार्त्तवीर्य के कष्टों से मुक्ति दिखवायेंगे।

\+ \+ \+

प्राचीन काल में कान्यकुब्ज प्रदेश में गाधि नामक एक राजा पुत्राभाव के कारण राज्य छोड़कर वन में चला गया। वहाँ उसके पुत्री हुई। उस पुत्री का विवाह महर्षि भृगु के पुत्र ऋचीक से हुआ। दोनों पति-पत्नी ने भृगु की खूब सेवा की। प्रसन्न होकर भृगु ने उनसे वर माँगने को कहा। गाधि पुत्री (ऋचीक पत्नी) ने अपनी माता एवं अपने निमित्त एक-एक पुत्र का वरदान माँगा। महर्षि भृगु ने एक ब्रह्मप्रधान एवं एक क्षात्रप्रधान-दो चरु तैयार किये और बताया कि इस ब्रह्मप्रधान को ऋचीक-पत्नी खा जाय तथा दूसरे को गाधिपत्नी। ऋचीक-पत्नी ने गलती से क्षात्र प्रधान वाला चरु खा लिया। यह जानकर भृगु ने कहा स्नुषे: तुम्हारा पुत्र क्षत्रियत्वगुण युक्त होगा तेरी मां का पुत्र ब्राह्मणत्व गुणयुक्त। ऋचीक पत्नी ने कहा, भगवन्! ऐसी युक्ति कीजिए कि मेरा पुत्र तो ब्रह्मवृत्ति ही हो चाहे पौत्र क्षात्र वृत्ति हो जाय। उन्होंने 'एवमस्तु' कह दिया। तदनु उसके गर्भ से ऋचीक का पुत्र जमदग्नि हुआ और जमदग्नि के रेणुका के गर्भ से पांच पुत्र उत्पन्न हुए जिनमें सबसे छोटे भगवान् परशुराम थे। भगवान परशुराम का अवतार त्रेतायुग के आरम्भ में वैसाख शुक्ल पक्ष की अक्षय तृतीया को हुआ था।

एक दिन रेणुका नर्मदा स्नान के लिये गई थी वहां वह मार्तिकयाधिपति चित्ररथ को अपनी भार्या के साथ जल कीड़ा करते हुए देखकर कामातुर हो गई। जब वह आश्रम में आई तो जमदग्नि ने उस पर मानसिक का व्यभिचार का दोष लगाया, शिरश्च्छेद का दण्ड सुनाया। मां का सिर काटने को कोई भी पुत्र तैयार नहीं हुआ इससे ऋषि ने उन्हें अचेतन होने का शाप दे दिया। जब परशु राम आये तो उन्होंने पिताकी आज्ञा पाते ही मां का शिरश्च्छेद कर दिया। इससे मुनि का क्रोध शान्त हुआ और उन्होंने परशु राम से वर मांगने के लिये कहा। तब उन्होंने मातृ पुनर्जीवन, स्वबुध की विस्मृति, मातृवध जन्यपापनाश, भाइयों की सचेतनास्थिति, तथा युद्ध में अपना अपराजेयत्व, एवं अपना चिरञ्जीवन मांगा। ऋषि ने प्रसन्न होकर सब दे डाला।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

महर्षि जमदग्नि ने पाँचों पुत्रों को वेद शास्त्र, शस्त्रास्त्र विद्याएं पढ़ाई। इसके पश्चात् भगवान् परशु राम दुष्कर-तप करने के लिए पुष्कर नाम तीर्थ में चले गये और वहां समस्त योग का अभ्यास करते रहे।

\+ \+ \+

एक बार राजा कीर्तवीर्य शिकार खेलने वन में गया और वहां शिकार न मिलने पर अपने सारे दल बल के साथ भूखा प्यासा मरने लगा तो जमदग्नि ने अपनी गो कामधेनु की दिव्य शक्ति से ससैन्य राजा का समस्त भोज्य पदार्थों से स्वागत किया। अपने राज्योन्माद से उन्मत्त कार्तवीर्य ने गौ को मांगा और न देने पर बलात् हरण करने का यत्न किया किन्तु गौ ने उसके समस्त प्रयत्न व्यर्थ कर दिये। उसकी कुछ सेना मारी गई शेष भाग गई। बाद कार्त वीर्य ने दूत भेज कर अपने प्रदेश से और सेना मंगाई। और ऋषि जमदग्नि के पास यह कहलवा भेजा कि कामधेनु मुझे सौंप दो नहीं तो मुझ से युद्ध करो। मुनि ने उसे समझाया किन्तु वह सेना लेकर मुनि पर आक्रमण करने लगा। मुनि ने उसे पराजित कर दिया। पर कार्तवीर्य ने कामधेनु के नाम पर फिर युद्ध शुरू कर दिया। राजा ने ब्रह्माशस्त्र का प्रयोग किया मुनि ने वरुणास्त्र से उसे काट दिया। इस प्रकार विभिन्न दिव्यास्त्रों के प्रयोग लड़ाई में हुए। अन्त में ब्रह्मा जी ने युद्ध रुकवाया और कार्तवीर्य अपनी राजधानी में चला गया।

कार्तवीर्य ने राजधानी में आकर सेना का गठन किया और जमदग्नि को मारने की इच्छा से जमदग्नि को तपोवन में आ पहुंचा। इस बार और भयानक शस्त्रास्त्रों का प्रयोग हुआ और अन्त में कार्तवीर्य ने एक अमोघ शक्ति मुनि पर छोड़ी जिसने मुनि के वक्षःस्थल को फाड़ दिया। जमदग्नि को निष्प्राण देखकर शोकाकुल कपिला (कामधेनु) वैकुण्ठ चली गई। कार्तवीर्य ने ब्रह्महत्या भी की और उसके उद्देश्य की पूर्ति भी नहीं हुई। वह निराश अपने स्थान को लौट गया।

जमदग्नि के रक्त रञ्जित शरीर को देखकर उनकी पत्नी रेणुका करुण क्रन्दन करते हुए अपने परशुधारी पुत्र को पुकारने लगी। उत्पीड़ित जननी के करुण क्रन्दन ने परशुराम की समाधि को डगमगा दिया। वह तत्काल माँ के सम्मुख उपस्थित हुए। पति शोकार्ता रेणुका परशुराम के सम्मुख अपने वक्षःस्थल को पीट पीट कर विलाप करने लगी। मां के हाथों की चोटें परशुराम के हृदय पर भी आघात पहुंचा रही थी। उनको लगा; जैसे देवत्व पर पैशाचिकता आक्रमण करने लगी हो, सुख शान्ति को



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उत्पीड़न ने आ घेरा हो या उनके शौर्य को पैशाची अत्याचार ने ललकारा हो। उनके शरीर में एक प्रलयंकारी उत्साह और रुद्रता जाग उठी और बोल पड़े—"मां अभी इस धरा से न्याय लुप्त नहीं हुआ है। पृथ्वी पुत्रविहीन नहीं हुई। शौर्य मरा नहीं। तुम धैर्य धारण करो। तुमने इक्कीस बार अपनी छाती पीटी है अतः मैं प्रतिज्ञा करता हूं कि जिन नर पशुओं ने राज्य के उन्माद में आकर सर्वहितकारी गौ और ब्राह्मण की हत्या की है उनको मैं इक्कीस बार ही पराजित करूंगा।

जो भौतिक बल, बौद्धिक और आध्यात्मिक उन्नति की हत्या करे उसे नही टिकने देना चाहिए। जो रक्षक भक्षक बन जाय उसे समाप्त ही कर देना चाहिए। उन्होंने प्रतिज्ञा की कि राज्यशक्ति के उन्माद में जो क्षत्रिय धरा की सुख शान्ति को भी कुचलने लगे उस क्षत्रियत्व को ही में धरा से मिटा दूंगा। माँ तुम धैर्य धरो। मैं पशुबल से मानव की रक्षा करने आया हूं। सर्वप्रथम मैं उस कार्तवीर्य के रक्त से से महर्षि जमदग्नि का तर्पण करूंगा"।

तदनन्तर रेणुका ने एक चन्दन चिता बनवाई और अपने पति का शरीर में रख सत्ती होने की तैयारी करने लगी। इसी बीच एक आकाशवाणी हुई कि—"भद्रे इस धरती से अन्याय मिटने वाला है, तुम मरो मत तुम्हारा मृत पति पुनर्जीवित हो जायगा।" यह सुनकर रेणुका ने ने मरने का विचार छोड़ दिया। इसी समय महर्षि भृगु भी वहां आये और उन्होंने रेणुका और उसके पुत्र को कुछ बातें बताई एवं अपने पुण्य प्रताप से जमदग्नि को पुनर्जीवित कर दिया। पिता जमदग्नि के सामने भी परशुराम ने अपनी वही प्रतिज्ञा दुहराई। पिता ने क्षमादान को कहा, किन्तु परशुराम ने अपने तर्क से उन्हें मौन कर दिया। पुत्र को अपने लक्ष्य में सुस्थिर समझ कर जमदग्नि ने उन्हें भगवान् शिव की आराधना करने तथा त्रैलोक्य विजय कवच प्राप्त करने के लिए कैलाश पर्वत पर भेज दिया।

—क्रमशः

गाओ कवियो! जयगान, कल्पना तानो,
आ रहा देवता जो, उसको पहचानो।
है एक हाथ में परशु, एक में कुश है,
आ रहा नये भारत का भाग्यपुरुष है।
– दिनकर



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सलाम मछली शहरी उर्दू की नई पीढ़ी के मूर्धन्य कवि थे। लम्बी बीमारी के बाद पिछले दिनों उनका स्वर्गवास हो गया।

सलाम मछलीशहरी ने अपनी यह अन्तिम कविता आपरेशन से पहले लिखी थी।

—संपादक

मुझ को सहर का यकीन हो गया है
कलस बिरला मन्दिर के
सहर का धुंधलका
बुलंद और घनेरे दरख्तों के पीछे
कलस बिरला मन्दिर के यों लग रहे हैं
कि जैसे कई देवता आसमां से
सफेद अबर पारों पर बैठे हुए
जमीं की तरफ आ रहे हों
विलिंग्डन के सैंतीस नंबर कमरे का
यह सब्ज परदा उठाकर
मैं कुछ देर से सोचता हूं
मेरा आपरेशन तो मंगल को होगा
मगर देवता बरकतें अपनी लेकर
मेरे सात मासूम बच्चों की खातिर
अभी से मेरे ही लिए आ गए हैं
तो फिर ऐ अजल कोश
बुजदिल ख्यालो
महीनों से क्यों मुझको घेरे हुए हो
मेरे परदारीजेहन से अब हटो भी
कि मुझको सहर का यकीन हो गया है
यकीनन अभी काम करना है मुझको
यकीनन अभी जिंदा रहूंगा।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

# वेदों में विज्ञान-चर्चा

—आचार्य मेघराज

वेद शब्द की व्युत्पत्ति क्या है ? इस सम्बन्ध में संस्कृत व्याकरण के अनुसार 'विद्' धातु से 'हलश्च' सूत्र से घञ् प्रत्यय लगाने से 'वेद', शब्द बनता है, इस विद् धातु के चार अर्थ होते हैं—ज्ञान-सत्ता लाभ और विचार। अतः जिसके द्वारा समग्र जनसमुदाय समस्त सत्यविद्याओं को, जानते हैं, प्राप्त करते हैं, विद्वान होते हैं और विचार करते हैं, वह वेद है। इसके सम्बन्ध में विज्ञानमानन्द ब्रह्म, (ब्रहदारण्यक ३-९-८) वास्तव में वेद ब्रह्म है और वही विज्ञान है। वैज्ञानिक तत्व को मूल से प्रतिपादित करने वाला शास्त्र ही वेद नाम से व्यवहृत होता है।

वेद चार हैं। ऋग्, यजु, अथर्व और साम। ये चारों वेद स्वतः प्रमाण और अपने आप में परिपूर्ण हैं जो विभिन्न विषयों का भिन्न-भिन्न प्रकार से ज्ञान कराते हैं। वेदों में अध्यात्मिक ज्ञान की चर्चा होते हुए भी विज्ञान की भी कमी नहीं है। वेदों के वैज्ञानिक विवेचन में निरुक्तकार आचार्य यास्क सर्वाधिक प्रसिद्ध हैं।

## विद्युत् विज्ञान

विद्युत् विज्ञान के सम्बन्ध में आचार्ययास्क निरुक्तशास्त्र के (अ० ७-४-४) में लिखते हैं कि अग्नि तीन प्रकार की होती है। प्रथम अग्नि जिसे हम देखते हैं वह पृथ्वी लोक की अग्नि है। और दूसरी अग्नि अन्तरिक्ष लोक की है जिसे हम विद्युत् (बिजली) के नाम से पुकारते हैं। तीसरी अग्नि द्युलोक की है जिसे हम सूर्य के नाम से पहचानते है।

विद्युत् विज्ञान के सम्बन्ध में आचार्य लिखते हैं —

अभिप्रवन्त समनेव योषाः कल्याण्यः
स्मयमानासो अग्निम्।
घृतस्य धाराः समिधो नसन्त तादृ-
षाग्ने हर्यति जातवेदाः ॥



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अर्थात अच्छे मन वाली मुस्कराती हुई ललनाओं के समान घृत (जल) धाराएं समिध के रूप में अग्नि के पास जाती हैं सूर्य की किरणों के द्वारा खींची गई उदक [जल] की धारा ही विद्युत् अग्नि की समिध है—आहार हैं [अर्थात् बिजली का भोजन, जल है।] इस मन्त्र से विद्युत् विज्ञान स्पष्ट हो जाता है।

इस विद्युत् विज्ञान के दृढीकरण के लिए आचार्य लिखते हैं—

**मध्यमधर्मेव तावद् भवति-उदकेन्धनः शरीरोपशमनः।**

**उदीयमान एवायं सम्पद्यत उदकोपशमनः शरीरदीप्तिः॥**

भाव यह है कि अन्तरिक्षस्थानीय अग्नि [विद्युत्] का ईन्धन जल है जिससे वह उद्दीप्त होती है और काष्ठ [लकड़ी] से उपशमन होती है। और पृथ्वीस्थानीय अग्नि, [विद्युत् अग्नि के विरुद्ध] काष्ठ से जलती है और जल से शान्त होती है। इससे विद्युत् विज्ञान स्पष्टरूप से सिद्ध हो जाता है।

## वृष्टि विज्ञान

वृष्टि विज्ञान के सम्बन्ध में आचार्य यास्क ने ऋग्वेद [२, ३, २३, १] के मन्त्र की व्याख्या निम्नप्रकार से की है—

**कृष्णं नियानं हरयः सुपर्णा अपो वसाना दिवमुत्पतन्ति।**

**त आव वृत्रन्त्सदनादृतस्य आविद् घृतेन पृथिवी व्यूते॥**

**(नि० ७-७-१)**

भाव यह कि सूर्य की किरणें जब पृथ्वी से टकरा कर ऊपर की ओर उठती हैं और अन्तरिक्ष में पहुंचती हैं, तो जल से पृथ्वी आर्द्र होती है, अर्थात् वृष्टि होती है।

आचार्य ने इसी वृष्टि विज्ञान को ऋग्वेद के इन्द्रसूक्त के मन्त्र से निम्न प्रकार से पुष्ट किया है।

**दासपत्नीरहिगोपा अतिष्ठन्निरुद्धा आपः पणिनेव गावः। [नि० अ० २]**

इस मन्त्र का भाव यह है कि—जैसे व्यापारी गौओं को एक स्थान पर एकत्रित करके बाहर से बन्द कर देता है उसी प्रकार वृत्त द्वारा रोके गए जलों की मुक्ति के लिए अर्थात् वृष्टि करने के लिए इन्द्र ने वज्र प्रहार से वृत्र को मारा और मेघों को मुक्त किया, वृष्टि कराई। निरुक्तशास्त्र में आचार्य ने, इन्द्र का अर्थ वायु, और वृत्र का अर्थ मेघ (बादल) किया है। अभिप्राय यह है कि जब बादलों से वायु टकराता है, बादलों को छिन्न-भिन्न करता है तभी वृष्टि होती है।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

## शिल्प विज्ञान

यह विज्ञान भी प्राचीन काल से प्रचलित है, जिसका कथानक ऋग्वेद के इन्द्रसूक्त में इस प्रकार से है।

देवताओं के प्रसिद्ध शिल्पी त्वष्टा ने इन्द्र को वज्र नामक अस्त्र बना कर दिया था और त्वष्टा से ऋभु आदि तीन भाईयों ने वज्र बनाने की शिक्षा ली थी। ऋभुओं ने अपने बौद्धिक विलक्षणता के अभिमान से इन्द्र के पास त्वष्टा की निन्दा की। यह सुनकर इन्द्र ने ऋभुओं को किसी विलक्षण यन्त्र के निर्माणार्थ आदेश दिया। इस आदेश के अनुसार ऋभुओं ने अनेक नये यन्त्रों का आविष्कार किया जिन में एक आकाशचारी विमान [हवाई जहाज] भी था जिसे देख ऋषियों ने प्रसन्नता से निम्न मन्त्र में ऋभुओं के विमान की प्रशंसा की :—

**अनश्वो जातो अनभीषुरुक्थ्यो रथ-**
**स्त्रिचक्रः परिवर्ततेरजः।**
(ऋ० ४-२६)

हे ऋभुओं आप द्वारा निर्मित रथ की हम प्रशंसा करते हैं, जो अपूर्व है, बिना घोड़ों के चलता है, गोलाकार और तीन पहिये वाला, और पृथ्वी आकाश, दोनों पर चलने वाला है, अतः हम सोमपान के लिये अपने घर में निमन्त्रित करते हैं। -

दूसरा विमान ऋभुओं ने इन्द्र को बनाकर दिया था जिसका नाम हरि था, जो घोड़े के आकार का था। इस के अतिरिक्त एक विमान बृहस्पति को दिया था, जिसका नाम विश्वरूपा था, वह गौ के आकार का था।

इस प्रकार से बहुत सी वैज्ञानिक बातें वेदों में उपलब्ध हैं।

---

दो मित्र होटल में खाना खा चुके, तो बैरे उसके हाथ धुलाये और खूटी से कोट उतार कर अपने हाथ से पहना दिया। उसने बैरे को २ रुपये इनाम दिये।

दूसरे मित्र ने पूछा, "इतना इनाम क्यों दे दिया ?"

"क्यों क्या २ रुपयों में यह कोट मंहगा है ?" पहले मित्र ने पूछा।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कहानी

# १८ फरवरी

—सुबोधकुमार

**आकाश** के निस्तब्ध वातावरण को चीरता हुआ अवनीत का हवाई जहाज तेज गति से स्वदेश की ओर उड़ान भरने लगा। और उससे भी अधिक तेज गति से उड़ान भरते हुए अवनीत के विचार घंटों पूर्व ही अपने देश में आ उतरे। "हां सफेद सी साड़ी में लिपटी हुई भूमिका ही तो है वह, दूर खड़ी हुई सबके बीच वह भी उसकी ओर देख कर, बड़े उत्साह से अपना हाथ हवा में हिला रही है।..... सबके बीच .....तो क्या मेरे घर वाले भूमिका को जान गये हैं? क्या भूमिका ने उनका भी हृदय जीत लिया है, नहीं तो वह सबके बीच क्यों खड़ी है? हां सचमुच कितनी अच्छी है भूमिका, उसने सबको अपना बना लिया है, लेकिन उसने अपने किसी भी पत्र में इस बात की चर्चा नहीं की, हो सकता है वह उसको आश्चर्य में डाल देना चाहती हो। उसको विश्वास नहीं हो रहा था कि उसकी अनुपस्थिति में भूमिका इतनी टेढ़ी-मेढ़ी परिस्थितियों को अपने अनुकूल बना लेगी। कितना कठिन कार्य समझता था वह इसको अमेरिका जाने से पूर्व।

+ + +

"चुप क्यों हो गईं?"

"नहीं तो," भूमिका ने अपना चेहरा ऊपर उठाते हुए अवनीत की बुझी-बुझी आंखों में देखा, उसको लगा हजारों तमन्नाएं कितने ही अरमान सिमट कर आ बसे हैं इनमें।

"क्या देख रही हो इस प्रकार भूमि?"

"देख रही हूं इस समय तुम्हारी आंखों में सहस्त्रों स्वप्न झांक रहे हैं अवनीत। हां भविष्य के सपने, छोटा



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सा सुन्दर सा घर और उसके आंगन में खेलता हुआ छोटा सा सुन्दर सा एक·····।"

"पगली कहीं की," अवनीत ने भूमिका के दोनों कन्धे पकड़ कर जोर से हिला दिये। "हमारे ये सपने अवश्य ही साकार होंगे, मेरी गुड़िया।"

"बात सुनो भूमि, सोचता हूं अब सब कुछ घर पर बतला देना ही उचित होगा। मैं जानता हूं वे लोग इसका कड़ा विरोध करेंगे, और हमें इसका सामना करना होगा।"

"नहीं अभी नहीं अवनीत पहले तुम अपनी अमेरिका की पढ़ाई पूरी कर आओ, उसके बाद·····।"

अमेरिका, कौन जा रहा है अमेरिका, तुम्हें इस दशा में छोड़ कर।

"पागल तो नहीं हो गये हो तुम। कैसी दशा है मेरी? ठीक तो हूं, ऐसा अच्छा अवसर मिला है बाहर जाने का·····।"

"अवसर आते जाते रहते हैं भूमि। परन्तु तुमने जो अपनी यह दशा बना ली है, इसका क्या होगा? हर समय मेरा ध्यान यहीं लगा रहेगा, क्या खाक पढ़ाई होगी मेरी वहां" अवनीत ने एक ही सांस में यह सब कुछ कह दिया।

"तो इसका सीधा सा अर्थ यह हुआ कि मैं एक रुकावट हूं तुम्हारी उन्नति में, आज के बाद तुम मेरी सूरत भी नहीं देखोगे' भूमिका ने अपनी भीगी हुई आंखों को अपने हाथों से ढक लिया।

"नहीं भूमि नहीं तुम गलत समझ रही हो, तुम तो मेरी प्रेरणा हो, तुम्हारे ही कारण आज तक मैं यह सब कुछ कर पाया हूं।" समझाते और सांत्वना बंधाते हुए स्वर में अवनीत ने कहा।

"तो फिर इस प्रकार उल्टी-सीधी बातें क्यों करते हो, क्यों नहीं जाओगे वहां पढ़ने के लिए?" भूमिका ने रुआंसी सी आवाज में में कहा।

"जाऊंगा बाबा अवश्य जाऊंगा, बस तुम अपने स्वास्थ्य का पूरा पूरा ध्यान रखना।"

"तुम इसकी तनिक भी चिन्ता न करो, जैसे ही मेरी बीमारी अपने सामने अमेरिका से आये इतने बड़े डाक्टर को देखेगी स्वयं भाग खड़ी होगी, "भूमिका ने अपने चेहरे पर मुस्कुराहट बिखेरते हुए कहा। "हां परन्तु जाने से पहले एक शर्त है" अवनीत ने कुछ सोचते हुए कहा।

"मुझे तुम्हारी सारी शर्तें स्वीकार हैं, सुनूं जरा वह कौन सी शर्त हैं?

"वहां प्रतिदिन तुम्हारा मुझे पत्र मिलना चाहिए।"

मैं वायदा करती हूं कि प्रतिदिन ही तुम मेरा पत्र पाओगे।"



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

"बस देख लेना मैडम, यदि कभी भी मुझे ऐसा न हुआ तो मैं बीच ही में तुम्हारे पास आ जाऊंगा।" अवनीत ने अपनी भवों को कुछ टेढ़ा-मेढ़ा करते हुए कहा।

"सचमुच कितने अच्छे हो अवनीत तुम, भला मैं ऐसा क्यों करूंगी, मैं तो प्रतिदिन ही अपने अवनीत को एक पत्र लिखा करूंगी।" बीच में कुछ रुकते हुए भूमिका ने पूछा, "बात सुनिये, अगले ही सप्ताह तो जाना है आपको।"

"हाँ अगले सप्ताह की ही बुकिंग है, जानती हो क्या तारीख पड़ेगी उस दिन, अट्ठारह फरवरी, यानि तुम्हारा जन्म दिन, कैसे जा पाऊंगा मैं उस दिन;" अवनीत ने बहुत ही गम्भीर मुद्रा में लम्बी सी साँस खींचते हुए कहा।

"लो फिर क्या हो गया। हर साल ही जन्म दिन आता है, न जाने कितने ही जन्म दिन हम दोनों मिल कर मनायेंगे। और रही उपहार की बात, वह पहले ही दे दो।" भूमिका ने हास्य की चुटकी लेते हुए कहा।

"बड़ी स्वार्थी हो तुम, मेरे जाने की चिन्ता न होकर तुम्हें अपने उपहार की चिन्ता होने लगी है।" हंसतें हुए अवनीत ने कहा।

+ + +

उपहार, हां आज अमेरिका से उसके लिये वह एक ऐसा सुन्दर उपहार लेकर लौट रहा है। उसके लिए वह गहरे लाल रंग की साड़ी लाया है। जिसको लपेट कर वह भूमिका को सदैव के लिये अपने घर ले आयेगा। लण्डन फैंकफर्ट, बेरूत और अब बस बम्बई आने ही वाला है। लगभग आठ घण्टों तक वह इन्हीं कल्पनाओं में खोया रहा, उसकी खुशियों को आज हिमालय की चोटियों से भी नहीं नापा जा सकता था।

सांताक्रुज हवाई अड्डे पर उसके घर के सभी सदस्य एकत्रित थे, कितना प्रसन्न हुआ वह, इतने लम्बे समय पश्चात्, सब लोगों को देख कर। लेकिन·····लेकिन भूमि····· और फिर स्वयं ही हंस दिया अपनी मूर्खता पर, भला वह यहां सबके होते हुए कैसे आ सकती है? और फिर उसने उसको लिखा भी तो न था कि किस दिन आ रहा है। कितना आश्चर्य होगा, जब वह उसको अपने सामने देखेगी।

अवनीत घर पर बहुत से संबंधी एवं मित्रों से मिलने में व्यस्त था वह शीघ्र ही यहां से छुटकारा पाकर भूमिका के पास जाना चाहता था, उसका एक-एक पल बड़ी कठिनाई से व्यतीत हो रहा था।

"भैया आपका फोन है, डाक्टर विमल आपसे कोई जरूरी बात करना



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

चाहते हैं अवनीत की छोटी बहन ने आकर कहा।"

"डाक्टर ···विमल·····कौन ····· कौन हो सकता है," कुछ सोचती हुई सी मुद्रा में उसने खड़े होते हुए बहन की ओर देखा।

"हां भैया पहले भी इनका कई बार फोन आया है, कल शाम को भी आया था, आपके आने के बारे में पूछ रहे थे, हमने कह दिया था आज प्रातः ही पहुंच जायेंगे।"

"हैलो ····हां मैं अवनीत बोल रहा हूं।"

'देखिए शायद आप मुझसे परिचित नहीं हैं, मैं विमल नर्सिंग होम, मैरीन लाइन्स से बोल रहा हूं, भूमिका ···· " दूसरी ओर से आवाज आती-आती कुछ बन्द हो गई।

"हां-हां डाक्टर बोलो क्या बात है। क्या मेरी भूमि हस्पताल में हैं। क्या उसका आपके यहां इलाज हो रहा है कैसी है वह ? जल्दी बतलाइये डाक्टर," अवनीत के हाथ से रिसीवर गिरने लगा।

"हां मिस्टर अवनीत घबराने की बात नहीं है, तुम यहां पहुंच जाओ" डाक्टर का भारी स्वर सुनाई पड़ा।

उसने तुरन्त ही उपहार वाला डिब्बा उठाया और चल दिया मैरीन लाइन्स····· विमल नर्सिंग होम। रास्ते में न जाने कैसे-कैसे विचार आ रहे थे, फिर एक झटके साथ वह उन सारे विचारों के ताने-बाने तोड़ देता, नहीं-नहीं बिल्कुल ठीक होगी भूमि, जिस दिन वह अमेरिका छोड़ रहा था, उस दिन भी तो उसका पत्र मिला था, ऐसे ही थोड़ी बहुत तबियत सी खराब हो गई होगी, और फिर मुझे देख कर तो वह अपनी सभी बीमारियों को भूल बैठेगी। उसके होठों पर मुस्कुराहट बिखर गई, आज भी अठ्ठारह फरवरी है, कितना अन्तर होता है समय-समय का, एक वह अठ्ठारह फरवरी थी जिसने तीन लम्बे वर्षों के लिए मुझे भूमि से जुदा कर दिया ····और आज भी अठ्ठारह फरवरी ·····आज मैं अपनी भूमि का जन्मदिन····· एक लम्बी-सी बिल्डिंग के सामने झटके से टैक्सी रुकी, अवनीत ने उतरते ही देखा एक भारी से शरीर का व्यक्ति उसकी ओर बढ़ा।

"मैं तुम्हारी ही प्रतीक्षा कर रहा था अवनीत : माई सैल्फ डाक्टर विमल," हाथ आगे बढ़ाते हुए उसने कहा।

"वेरी ग्लैड टु मीट यू, कौन-सा कमरा है भूमि का डाक्टर, अवनीत ने बेचैनी का-सा अनुभव करते हुए पूछा।

हाँ-हां चलिए मैं आपके साथ ही चल रहा हूं" डाक्टर विमल उसको



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

लिये एक कमरे में प्रविष्ट हुए। जिसमें दो तीन कुर्सियाँ और एक खाली बैड था। डाक्टर ने कमरे की चिटकनी अन्दर से लगा ली।

"लेकिन भूमि का कमरा कहाँ है डाक्टर" कहते हुए उसने डाक्टर की अर्थ भरी आँखों की ओर देखा।

हाँ बैठो अवनीत यहीं है भूमिका का कमरा, अवनीत तुम स्वयं भी डाक्टर हो, क्या आज तक मैडिकल साइन्स ने मौत का कोई इलाज ढूंढ़ निकाला है क्या·····

'आखिर डाक्टर कहना क्या चाहते हैं आप ·····डाक्टर ईश्वर के लिये अपना मुंह बन्द कर लो·····" अवनीत की आखें जलने लगी थीं।

"नहीं तो क्या वह सच्चाई खत्म हो जाएगी, जिसको सुनने के लिये तुम्हारे कान तैयार नहीं हैं। हां अवनीत मौत एक हकीकत है, वास्तविकता है, मुंह बन्द कर लेने से यह टल नहीं जाती।" डाक्टर ने अवनीत के कन्धे पर हाथ रखते हुए कहा। "धैर्य से काम लेना होगा अवनीत और अब ·· हां आज से ठीक दो महीने पूर्व ही मृत्यु के कठोर हाथों ने उसको हमसे छीन लिया था, कहते कहते डाक्टर का स्वर गम्भीर पड़ गया।

नहीं यह सब झूठ है आप झूठ बोल रहे हैं डाक्टर, मुझे परसों भी उसका पत्र मिला था, मुझे प्रतिदिन उसका पत्र मिलता था, आप मेरे साथ अवश्य ही कोई छल कर रहे हैं, क्रोध से अवनीत काँपने लगा।

यह कोई छल नहीं है मेरे दोस्त यही तो मैं तुमको उस भोली-भाली लड़की का बलिदान सुनाने जा रहा हूं। बस धैर्य रखकर मेरी बात सुन लो, "उसने अवनीत को पकड़ कर कुर्सी पर बैठा दिया।"

"हां अवनीत जिस दिन वह मेरे अस्पताल में आई, उसी दिन से न जाने क्यों मेरे मन में उसके प्रति एक विशेष सहानुभूति उत्पन्न हो गई थी, मैं हर समय उसका बहुत ध्यान रखता, रात को वह कुछ देर से सोया करती थी, मेरे कई बार चेतावनी देने पर भी वह रात को बैठी न जाने क्या-क्या लिखा करती थी, उसने मुझे तुम्हारे बारे में भी बतला दिया था। लेकिन एक रात मैंने देखा उसके कमरे से रात के दो बजे भी प्रकाश आ रहा है, मैंने सोचा उसने बत्ती अभी तक बन्द क्यों नहीं की। मैंने देखा वह बेचैनी से कमरे में घूम रही थी, वह उसकी अन्तिम रात थी, मौत के डरावने साये उसको सोने नहीं दे रहे थे। मुझे सामने देख वह कुछ कहते-कहते रुक-सी गई।

"क्या है? तुम अभी तक सोई नहीं हो?" मैंने कुछ रोबभरी आवाज में पूछा।

(शेष पृष्ठ ४० पर)



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

## खेल कूद की पनपती उमंग

# भगवान परशुराम शारीरिक प्रशिक्षण कालेज

बहुत पहले से यह मन्यता रही है कि शिक्षा वह है जो अर्थकरी हो। यदि शिक्षित होने के बाद भी युवक या युवती अपने को कुर्सी पर बैठने वाले काम के अलावा अनुपयुक्त पाए तो उसमें न उसका भला है और न ही देश अथवा समाज का। दिल्ली देहात के कुछ कर्मठ व्यक्तियों ने इस बात को समझा और इस दिशा में संगठित रूप में गतिशील हो गए। संगठन बना—भगवान परशुराम सर्वांग शिक्षा समिति। इस संगठन को वैचारिक और व्यावहारिक धरातल प्रमुख रूप से सुप्रसिद्ध प्रगतिशील पत्रकार व नवभारत टाइम्स के समाचार सम्पादक पं० हरिदत्त शर्मा ने प्रदान किया। शर्माजी के विस्तृत सम्पर्कों और कार्य कुशलता से यह संगठन इतना पुष्ट हो सका कि अम्बाला रोड पर हरियाणा सीमारम्भ के निकटस्थ गांव घोगा में शारीरिक शिक्षण कालेज की स्थापना करके विचार को कार्यरूप दे सका। इस शिक्षण कालेज का उद्देश्य राजधानी के और विशेष रूप से निकटवर्ती देहात के युवक-युवतियों शारीरिक अध्यापक बनना है। मैं वहां कई दफा गया और छात्र-छात्राओं की ड्रिल और परेड तथा अन्य गतिविधियां देखीं। मैं यह देख कर प्रभावित हुआ कि कालेज के अध्यापक बड़ी लगन से प्रशिक्षण दे रहे हैं।

भगवान परशुराम शिक्षा समिति की योजना यह भी है कि शारीरिक पाठ्क्रमों के अलावा डेरी-फार्मिंग, पत्रकारिता, फिल्म, नाटक आदि व्यावहारिक पाठ्क्रमों को भी यथा शीघ्र संचालित किया जाए।

इस कालेज के अवलोकन से देहातियों का इस योजना के प्रति उत्साह और लगन स्पष्ट झलकती है।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आल इण्डिया रेडियो के देहाती कार्यक्रमों में पटवारी का रोल करने वाले वृद्ध-नवयुवक चौ० होशियारसिंह की यह तमन्ना है कि इस कालेज के शारीरिक प्रशिक्षण के पाठ्क्रमों को मान्यता मिल जाए जिससे गांव के लड़के-लड़कियां रोजगार प्राप्त कर जागृति की ओर अग्रसर हों।

शिक्षा समिति के उपप्रधान श्री भागीरथलाल भारद्वाज तथा महासचिव श्री न्योराम शर्मा भी अपने-अपने पैरायों पर भगवान परशुराम कालेज की प्रगति के लिए कार्यरत हैं। प्रतिष्ठित कांग्रेसी नेता श्री भारद्वाज का दिल्ली देहात के अंचल में असर है और उनका यह असर कालेज की सफलता में अत्यन्त सहायक सिद्ध हो रहा है। वैसे समिति में कोई अधिकारिक ओहदा न होने पर भी प्रहलादपुर गांव के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री सीताराम शर्मा जिस निःस्वार्थ भाव और लगन से अपना समय कालेज की सेवा में लगा रहे हैं, उसके लिए वे अवश्य ही मुक्त कण्ठ से सराहना पाने के हकदार हैं।

भगवान परशुराम शारीरिक शिक्षा कालेज की स्थापना जुलाई सन् १९७३ में नेताजी सुभाषचन्द बोस के सहयोगी वयोवृद्ध नेता श्री शीलभद्र याजी, संसत्सदस्य, के द्वारा हुई। इसके बाद निरन्तर ही केन्द्रीय और प्रान्तीय शीर्षस्थ नेताओं के आगमन के प्रभाव से कालेज प्रगति की ओर अग्रसर रहा। इन नेताओं में प्रमुख रूप से उत्तर प्रदेश के वर्तमान मुख्यमन्त्री श्री हेमवतीनन्दन बहुगुणा, दिल्ली के मुख्य कार्यकारी पार्षद श्री राधारमण और नगर निगम के आयुक्त श्री बहादुरराम टम्टा को स्मरण किया जा सकता है। कालेज भवन का शिलान्यास गत वर्ष केन्द्रीय रेल मन्त्री श्री ललितनारायण मिश्र के द्वारा हुआ।

ग्रामीणों के उत्साह व दानशीलता से कालेज को ४० एकड़ भूमि तथा चार-पांच लाख रुपयों की धनराशि प्राप्त हो चुकी है। सप्रति में कालेज में ३४० विद्यार्थी हैं इनमें ९० छात्रायें हैं यद्यपि इनमें हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के छात्र-छात्रायें भी हैं पर इनमें अधिकतर दिल्ली प्रदेश के रहने वाले हैं। ये विद्यार्थी शारीरिक प्रशिक्षण के सर्टिफिकेट अथवा डिप्लोमा कोर्स का अध्ययन कर रहे हैं।

भगवान परशुराम शिक्षा समिति के सभी कार्यकर्ता और विशेष रूप से श्री रामेश्वरदत्त, श्री महासिंह शर्मा और चौ० सरदारसिंह जिस मनोयोग से इसके विकास में जुटे हुए हैं, वह भी उल्लेखनीय है।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

# सोवियत संघ में हिन्दी भक्ति साहित्य का अध्ययन

—ज० म० साजानोवा

आज हमारे देश (सोवियत संघ) में भारतीय संस्कृति तथा साहित्य के प्रति विशेष रुचि है न केवल विभिन्न अर्वाचीन भाषाओं के साहित्य परन्तु प्राचीन और मध्यकालीन में भी। इस समय सोवियत संघ में श्री रामचरितमानस चतुश्शती के अवसर पर विशेष समारोह का आयोजन किया जा रहा है। इस के लिए हमारे नगरों Moscow, Leningrad. Taskent. Dushanbe में विशेष समितियां गठित की गयी हैं और कई पुस्तकें प्रकाशित की जा रही हैं। तीस वर्ष पहले हमारे देश में सर्वप्रथम 'रामचरित मानस' का अनुवाद प्रकाशित हुआ था। सुप्रसिद्ध गण्यमान्य सम्भ्रान्त साहित्यकार, इतिहासकार, भाषाशास्त्री हमारे पूज्य लोकोत्तर वामी परम स्नेही गुरु श्रीयुत बरान्नीकोव (Barannikov) जो प्रथम व्यक्ति रहे, जिन्होंने हमारे देश में भारतीय संस्कृति के अन्तराल के दर्शन, साहित्य, इतिहास के क्षेत्र में अध्ययन की नींव डाली। और संस्कृत, हिन्दी, व्रज, अवधी, उर्दू के शब्द भाषाविज्ञान व्याकरण को रूसी भाषा में स्थापित किया। इस महान विद्वान की आत्मा सदैव चिरन्तन भारतीय ऋषिओं की परम्परा को शाश्वत-मानवता की उपलब्धि में भारतीय चेतना से सोवियत चेतना को एक प्राण किया। श्री रामचरितमानस के प्रथम पद्य-बद्ध भावानुवाद का शाश्वत-श्रेय इन्हीं को मिला।

इसके बाद हमारे देश में भारतीय संस्कृति का द्वार उन्मिलित हुआ। उन्होंने Russia में अगणित



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

श्रीमती साजानोवा मास्को विश्वविद्यालय में हिंदी विभाग की अध्यक्षा हैं। कृष्ण और उन पर लिखे गए साहित्य में उनकी आसक्ति है। पिछले दिनों प्रोफसर साजानोवा ने सूरसागर का रूसी भाषा में अनुवाद करके उसे सोवियत संघ में प्रकाशित करवाया था। कृष्ण के प्रति इस प्रेम के कारण श्रीमती साजानोवा रूसी राधा के नाम से विख्यात हो गई हैं। प्रस्तुत लेख श्रीमती साजानोवा ने 'शस्त्र और शास्त्र' के लिए विशेष रूप से तैयार किया है।

---

प्रबुद्ध चिन्तनशील विचारक दार्शनिक साहित्यकारों को जन्म दिया, जो आने वाली पीढ़ियों के लिए शत शत आशीर्वाद रूप में अमर रहेगी—भारतीय एवम् सोवियत चेतना के बीच।

दैहिक दैविक भौतिक तापा।
राम राज नहिं काहुहि व्यापा॥

हमारे देश के बहुत लोग मानते हैं कि मानवता, शुद्ध कवित्व तथा विद्वता की दृष्टि से श्री तुलसीदास जी हिन्दी कवियों के मुकुटमणि है। मनुष्य जीवन की अधिक से अधिक मनोदशायें और वृत्तियां तुलसी के साहित्य में दिखाई देती हैं। मानस की रचना जनसाधारण की भाषा में जनसाधारण के लिये की गयी है।

आदर्श रामराज्य के वर्णन से ज्ञात होता है कि श्री राम के शासन-काल में चारों ओर लोकतन्त्रीय वातावरण व्याप्त था और सभी लोग सहयोगपूर्वक जीवन व्यतीत करके सुखी थे।

"रामराज्य कर सुख संपदा।
बरनि न सकाई कनीस सारदा॥
सब उदार सब पर उपकारी।"

श्री राम की राजनीति में ऊंच-



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नीच का भेद भाव नहीं था। श्री तुलसीदास जी की कथा के अनुसार भक्ति भाव में शुद्र स्त्री शबरी ने राम जी को बेर खिलाने से पहले उसे स्वयं चख लिया।

श्री रामचरितमानस ने भटके हुए लोगों को मार्ग दर्शन, संघर्षशील जीवन को विश्राम,मानवता को जीवन दर्शन चरित्र एवम् व्यावहारिक-सृजन दिया। राम भारत-राष्ट्र की प्रति-मूर्ति, पर्यायवाची तथा प्रतीक हैं। एक आदर्श लोकनायक के सभी गुण श्री राम में हैं। तुलसी जी किसी भाषा या प्रदेश या देश तक सीमित न थे। अभी श्री रामचरितमानस Uzbek और Tajik लोग अपनी भाषा में पढ़ सकते हैं क्योंकि चतुश्शती समारोह प्रोग्राम के सम्बन्ध में Uzbek और Tajik में रामचरितमानस का अनु-वाद प्रकाशित हुआ।

साहित्य समाज का प्रतिबिम्ब है। समाज में जो सांस्कृतिक, धार्मिक या नैतिक स्थितियाँ होती हैं उन का प्रभाव अवश्य साहित्य पर होता है। इस विषय पर हमारे एक विद्वान Tsvetkov की पुस्तक प्रकाशित होगी श्री 'तुलसीदास के समय के बारे में'। हमारे सुप्रसिद्ध Prop. Dr. Chelyshev की अध्यक्षता में Moscova academy of science विशेष में साहित्यिक गोष्ठी हुई। Moscow संगीतकार Nikhailov ने 'रामचरितमानस' के आधार पर एक नये संगीत काव्य की (Music Poem) रचना की। सारी सोवियत जनता बड़ी जोरों से 'रामचरितमानस' चतुश्शती मनायी जा रही है।

आजकल हमारे देश में हिन्दी भक्ति साहित्य का अध्ययन विस्तृत रूप में आरम्भ हो रहा है। हमारे मास्को विश्वविद्यालय की साहित्यरत्न की परीक्षाओं से तुलसीदास, सूरदास, कबीर, मीराबाई तथा अन्य भी कई भक्त कवि निर्धारित हैं। रूसी भाषा में न केवल 'श्री रामचरितमानस' का अनुवाद है परन्तु श्री सूरदास कृत सूरसागर (दो सौ पद) कबीर पदा-वली इत्यादि। मास्को विश्वविद्यालय के प्राध्यपक अभी भक्ति कवियों का Antology प्रकाशन के लिए तैयार कर रहे हैं। भक्ति साहित्य की समस्या बहुत विशाल और महत्वपूर्ण है भार-तीय सांस्कृतिक इतिहास से प्रमाणित होता है कि भारत के हर भाषा में भक्ति युग वर्तमान होता है जैसे ब्रज में श्री सूरदास, अष्टछाप, श्री स्वामी हरिदास ने, बंगाल में चंडिदास, बिद्या-पति, जयदेव ( Sanskrit)।

इस तरह हम कह सकते हैं कि ११ (ग्यारहवीं) शताब्दी से लेकर सत्रहवीं (१७) श० तक सारे भारत में भक्ति साहित्य का बड़ा विकास हुआ था।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

फिल्म चर्चा

# उज्जवल भविष्य की प्रतीक्षा में : जलाल आगा

चेहरे पर मरदानगी की छाप, मोटी-मोटी आंखों में सजीव अभिनय कला की गहराइयों की झलक तथा कसरती जिस्म का यह नौजवान अपने आकर्षक व्यक्तित्व के कारण महफिल में आते ही छा गया। यह मेरी पहली मुलाकत थी पर उसके व्यवहार से ऐसा महसूस हो रहा था जैसे बचपन के लँगोटिया यार को बरसों बाद मिल रहा हूं, हो सकता है यह उसकी उत्कृष्ट अभिनय कला का प्रदर्शन हो, क्योंकि मैं सुप्रसिद्ध अभिनेता जलाल आगा की बात कर रहा हूं।

'सात हिन्दुस्तानी' तथा दो बूंद पानी' देख कर ऐसा अनुमान था कि यह नौजवान अभिनय के क्षेत्र में शीघ्र ही अपना विशिष्ट स्थान बनाने में सफल हो जाएगा। पूना इन्स्टीच्यूट से निकलने के पश्चात् सात साल के लम्बे संघर्ष के दौरान वह अभिनेता तो बन गया लेकिन स्टार न बन सका। जब इसका कारण मैंने जलाल से पूछा तो उसने जवाब दिया, "जब मैं बम्बई फिल्म उद्योग में आया तो मेरा दृढ़ विचार था कि दस प्रतिशत प्रेरणा तथा नब्बे प्रतिशत योग्यता तथा दक्षता इंसान को कामयाब बनाती है। लेकिन बम्बई में सात साल गुजारने के बाद मैं इस निर्णय पर पहुंचा हूं कि दस प्रतिशत प्रेरणा



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

एवं उत्साह और नब्बे प्रतिशत किस्मत इन्सान को सफलता प्राप्त करने के लिये जरूरी है। उसने दोनों हाथ ऊपर उठाकर आसमान की ओर देखते हुए कहा, "न जाने कौन से राहू-केतू का असर है खैर कोई बात नहीं यार, मेरे हाथ में भी बड़ी प्रभावशाली यश रेखा है मैं भी घबराने वाला नहीं हूं।" और जलाल ने अपनी दायीं हथेली मेरे सामने कर दी।

हाल ही में मोटे पेट और थुल-थुले शरीर, एक हीरो को कई फिल्मों में देखकर मुझे दुख हुआ कि आज भी फिल्म उद्योग में योग्यता की जगह किस्मत क्यों ज्यादा असर रखती है इसमें दोष किसका है निर्माताओं का अथवा दर्शकों का ?

जलाल साहब के आगमन की सूचना धीरे-धीरे फैलनी शुरू हो गई थी हमारे आफिस के बाहर गली में शोर उठ रहा था 'अन्दर जलाल आगा आया है' और भीड़ बढ़ती ही जा रही थी।

इस बात से मैं बहुत घबराता हूं जब भी कहीं कोई यह कहता है 'जलाल आगा एक्टर' तो मुझे ऐसा लगता है कहीं मेरी पूंछ तो नही निकल आई जो इस हैरानी से लोग मुझे देख रहे हैं।" जलाल ने लोगों के बढ़ते हुए शोर को सुन कर कहा, "हम भी इन्सान हैं फिर हमें क्यों नहीं आजादी से घूमने फिरने दिया जाता ?"

"आप लोग तो 'सितारे' हैं 'साहब' आपकी चमक से लोग चुंधिया जाते हैं आप मेकअप से भेस बदलकर घर से निकला करें।" मैंने सुझाव दिया "मेकअप की बात मत करो यार क्या मुसीबत है तुम नहीं जानते। हाल ही में मैं एक फिल्म में सरदार जी के रोल में आ रहा हूं। सैट पर रंणधीर कपूर से मैं मिला। वह बोला "सरदार जी सब ठीक-ठाक हैं न" और आगे निकल गया। जब उसे पता लगा कि मैं जलाल हू तो वह लौट आया। लंच के समय भी मैं मेकअप उतरवा देता हूं जो आराम से खाना खा सकूं यह हाल है साहब। साल में एक-आध महीना किसी ऐसी जगह बिताता हूं जहां कोई मुझे जलाल आगा न समझे, ऐसे ही एक दफा किसी गांव में गया वहां एक शाम शिकार की ताक में हाथ में बन्दूक लिए बैठा था कि पीछे से किसी ने कंधे पर हाथ रखते हुए कह "ई साहब इधर शूटिंग काहे को नाही करत हो।"

"भई शूटिंग ही तो कर रहा हूं।" मैंने जवाब दिया।

"ई शूटिंग नाहीं वो फिल्म वाला शूटिंग।" उस देहाती ने संकेत से समझाया।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मैंने सोचा आज तो बेटा यहाँ भी हो गया काम। बन्दूक उठाकर मैं डाक बंगले की ओर कदम बढ़ाता सोचने लगा वास्तव में भारत के ग्रामों में जागृति पैदा हो गई है।

"जलाल साहब अपनी किसी खास आने वाली फिल्म के बारे में बताइये।" मैंने घड़ी की सरकती सुईयों का ध्यान रखते हुए कहा।

"आने वाली फिल्मों में मुझे 'प्रतिशोध' पर काफी विश्वास है उसकी कहानी लीक से हटकर है। एक अच्छी कहानी ही सफल फिल्म की नींव होती है जिस पर अभिनेता,

अभिनेता जलाल आगा के साथ (बांए से दाँए) श्री सुबोधकुमार, श्री नीरजकुमार शर्मा और डॉली (गोद में)



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

निर्देशक तथा बाकी की टीम बढ़िया इमारत खड़ी कर सकते हैं।"

इसके पश्चात् जलाल ने अपराध वृद्धि पर आधारित फिल्म "प्रतिशोध" की कहानी सुनाई जो वास्तव में काफी प्रभावशाली थी और जलाल साहब के अभिनय से उस नायक प्रधान कहानी की सफलता की उम्मीद और भी मजबूत हो जाती है।

"फिल्म उद्योग में होने वाली शादियों के सैलाब को मद्दे नजर रखते हुए आपका समाचार छापने का अवसर कब तक मिल जाने की आशा है।"

अरे अपना अभी ऐसा कोई विचार नहीं। पहले कैरियर बना लूं तब इस बारे में सोचूंगा हां अगर कोई मन पसन्द लड़की मिल गई तो कह नहीं सकता।" जलाल साहब ने बड़े रहस्यपूर्ण ढंग से मुस्कराते हुए कहा।

"अपनी स्वप्न सुन्दरी के सम्बन्ध में कुछ बतायेंगे।" मैंने उत्सुकतावश पूछा।

राज की बात है महफिल में मत पूछो।

"तो यार कान में बता दो।" मैंने अपना चेहरा उसके नजदीक करते हुए कहा।

"एक मेरी मनपसन्द अभिनेत्री है जिसे मैं बचपन से बहुत चाहता हूं एकदम भारतीय ऊपर से नीचे तक अजन्ता एलोरा की मूर्ति की तरह बस कुछ वैसी ही मिल जाएगी तो कर लूंगा शादी।" जलाल साहब ने बड़े धीरे स्वर में कहा।

"उसका नाम भी बता दो गुरू ···" मैंने भी फुसफुसा कर कहा।

"देखो किसी को बताना नहीं।" जलाल ने मेरे कान में धीरे से कहा, "सुचित्रा सेन।"

पाठकों से मेरा सविनय निवेदन है कि वह इसे चुपचाप पढ़ लें कृपया किसी को बतायें नहीं क्योंकि मैंने जलाल साहब से वायदा किया था, हां अगर सुचित्रा सेन जैसी लड़की नजर आए तो जलाल साहब को खबर कर दें, उनका पता है :—

जलाल आगा, ६/२७
एयर कंडीशंड, तारदेव,
बम्बई-३४

---

सिपाही : हुजूर, भीड़ बहुत हो रही है, लोगों को कैसे हटाऊं ?
थानेदार : कह दो, पिछली गली में मिट्टी का तेल मिल रहा है ?



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai



# युवाओं में असन्तोष

## कारण और निराकरण

**असंतोष,** क्षोभ तथा आक्रोश तो आज सारे भारत में लगभग हर क्षेत्र में व्याप्त है। फिर भी युवा वर्ग में इसका प्रभाव अधिक परिलक्षित होता है। इसका कारण यह हो सकता है कि हमारे युवक-युवतियां जब अपने भविष्य में झांकने की कोशिश करते हैं तो उन्हें गहन अंधकार और अनिश्चित परिस्थिति के अलावा और कुछ नहीं दिखता। इससे उनका झल्ला उठना स्वाभाविक है। इससे वे हिंसा, तोड़-फोड़, मारधाड़ के मार्ग पर उतारु हो जाते हैं। यह सच है कि इस उद्देश्यहीन तथा उचित संचालन से विहीन हिंसा से क्रांति भी नहीं आ सकती, इससे तो केवल अराजकता फैलती है जिससे राष्ट्र की प्रगति का मार्ग और अवरुद्ध हो जाता है।

इन विचारों के दिमाग में उठते ही मैं इस सम्बन्ध में राजधानी के युवक-युवतियों तथा दिल्ली विश्वविद्यालय के छात्र-छात्राओं की राय जानने के लिए निकल पड़ता हूं।

**दिल्ली विश्वविद्यालय के युवक-युवतियों से एक परिचर्चा**

भेंट के दौरान बी० काम द्वितीय वर्ष के छात्र धीरेन्द्रनाथ पाठक ने बताया कि राजनीतिक दल छात्रों को हिंसा के मार्ग पर भड़काते हैं और



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अपनी स्वार्थ सिद्धी करते हैं। उन्होंने कहा कि राजनीतिक दलों की यह नीति निन्दनीय है। हिन्दू कालेज की एम०ए० हिन्दी की छात्रा मन्जू ठाकुर

ने युवा असन्तोष अथवा आक्रोश का कारण बेरोजगारी की स्थिति को बताया। जब युवा वर्ग को अध्ययन के बाद भी काम पाने की उम्मीद नजर नहीं आती तो वह बिगड़ उठता है। मन्जू ने कहा कि वैसे हिंसा और तोड़फोड़ करना उचित नहीं है पर आप ही बताइये कि एक साधनहीन असन्तुष्ट युवा अपने आक्रोश का प्रदर्शन और किस प्रकार करे ?

मौलाना आजाद मैडिकल कालेज में एम० बी० बी० एस० (डाक्टरी) के चौथे वर्ष पढ़ रहे छात्र अशोक कौशिक ने कहा कि राजनीतिक दलों को अनावश्यक रूप से छात्रों के बीच नहीं घुसना चाहिए। इसके अलावा यह भी जरूरी है कि शिक्षा ऐसी हो जिससे युवा वर्ग में विद्यार्जन के तुरन्त बाद ही काम करने की क्षमता आ सके। अशोक ने बताया कि हिंसा का मैं विरोधी हूं, पर अधिकारी वर्ग इस कदर बहरा हो गया है शान्ति की भाषा उसे सुनाई ही नहीं देती।

रेडियो स्टेशन के प्रांगण में मैं युवा नाटककार प्रमोद शर्मा से मिला

प्रमोद जी को जब मैंने अपनी भेंट का आशय बताया तो उन्होंने नाटकीय अंदाज में कहा—अरे भाई, यहीं खड़े-खड़े पूछोगे क्या ? चलकर कनाट प्लेस के किसी कांफी हाऊस में बैठ कर आराम से बातचीत करेंगे। हम दोनों वेंग्रस पहुंचे। वहाँ वातानुकूलित वातावरण में गर्म-गर्म कांफी की चुस्की के दौर में प्रमोद शर्मा ने गर्म-गर्म बात यह बतायी कि आज युवा



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वर्ग का भविष्य तो अनिश्चित है ही साथ ही वर्तमान भी स्थाई और सुखप्रद नहीं है। बड़े बुजुर्ग अपने में ही इतने व्यस्त और मस्त हैं कि उन्हें युवा वर्ग की तरफ ध्यान देने की फुरसत ही नहीं है इस स्थिति में युवाओं में क्रोध आना स्वाभाविक है। वे चालू परिस्थितियों में बदलाव चाहते हैं। युवकों की इस चाहत का समाज विरोधी तत्व नाजायज फायदा उठाते हैं। राजनीतिक दल भी इस कार्य में संकोच नहीं करते। अपनी इस बात की पुष्टि के लिए प्रमोद जी ने अपने छात्रकाल की घटना सुनाई—"जब मैं दसवीं कक्षा में पढ़ता था। उन दिनों गौ हत्या विरोधी आंदोलन का जोर था। भावना में आकर मैं भी कक्षा छोड़कर जलूस में शामिल हुआ। पर जलूस के बाद मुझे यह देखकर हैरानी और निराशा हुई कि जलूस के नेता और अगुवा गुलछर्रे उड़ा रहे हैं। उन्हें साथ आए बच्चों तथा औरतों की चिंता ही नहीं है।"

इसी सिलसिले में हुई मुलाकात में राजधानी से प्रकाशित हिन्दी मासिक "फिल्म सरोवर" के प्रधान सम्पादक तथा सामाजिक कार्यकर्त्ता अशोक पंडित ने गुजरात और बिहार के उपद्रवों की चर्चा करते हुए बताया

कि किंचित राजनीतिक दलों तथा निहित स्वार्थों ने मंहगाई, भुखमरी तथा बेरोजगारी की समस्या का वहां खुलकर लाभ उठाया है। प्रत्येक स्थिति में युवा वर्ग एकदम निर्दोष है। पंडित जी ने कहा, आज के असंतोष के वातावरण की जिम्मेदारी शासन वर्ग की पदलोलुपता और निकम्मेपन की ही है। यह सरकार का जिम्मा है कि वह युवक-युवतियों के सामने कुछ आदर्श रखे, कुछ रचनात्मक कार्य रखे तभी हिंसात्मक व विध्वन्सात्मक कार्यवाहियों के सिलसिले का खात्मा सम्भव हो सकता है।

---

**यह अंक आपको कैसा लगा ?**

आपकी प्रिय पत्रिका 'शस्त्र और शास्त्र' के प्रस्तुत अंक को आपकी अभिरुचि के मुताबिक बनाने की पूरी कोशिश की है। फिर भी इस सम्बन्ध में आपके सुझावों, आलोचनाओं और सहयोग की हमें प्रतीक्षा रहेगी।

—संपादक



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

# रूसी चित्रकार से मुलाकात

एक ढलती शाम को वैदिक मंत्रों से विदेशी अतिथियों का भारतीय ढंग का सत्कार। रोली, चावल तथा कलावे से सजी पूजा की थाली में महकती धूप-अगरबत्तियों की सुगन्ध विदेशी अतिथियों को विस्मयकारी सुखद अनुभूति से आनन्दित कर रही थी।

ये विदेशी अतिथि थे श्रीमती तथा श्री इल्या ग्लाजुनोव। सोवियत संघ के निवासी श्री ग्लाजुनोव प्रसिद्ध चित्रकार हैं तथा भारत सरकार के निमन्त्रण पर प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी का आदमकद चित्र बनाने के लिए यहां आए थे। उनकी पत्नी उनके निजी सचिव के रूप में आई थी। इन दोनों ने श्री हरिदत्त शर्मा से एक भेंट में यह अनुरोध किया कि वे वेदों का सस्वर पाठ सुनने का उन्हें अवसर प्राप्त करवायें। श्री इल्या ऋग्वेद और वैदिक काल के अध्येता जो ठहरे। शर्मा जी इस वर्ष के सोवियत नेहरू पुरकार के विजेता हैं तथा विख्यात प्रगतिशील पत्रकार है। उन्होंने सोवियत दम्पति के आग्रह को अपने निवास स्थान पर पूरा किया। और उन्हें ऋग यजुः साम तथा अथर्व वेदों के सस्वर और सविधि पाठ के श्रवण के लिए आमंत्रित किया था।

वेदविद ब्रह्मरण व्याख्याता वेदाचार्य श्री शिवदास मिश्र के नेतृत्व में अग्नि, वरुण, इन्द्र और रुद्रादि सम्बन्धी ऋचाएं स्वरों के आरोह-अवरोह के साथ कर मुद्राओं सहित गाते जाते थे और हल्या दम्पति गद्गद् होकर उन्हें इस तरह सुनते जाते थे जैसे उससे जनित रस से आप्लावित हो रहे हो।

इस दम्पती ने वेदों का अध्ययन किया है और यह निष्कर्ष निकाला है कि भारत तथा यूरोप की संस्कृतियों में ऐतिहासिक साम्यता है। ग्रीक तथा स्लाव राष्ट्रों में भी वरुण आदि प्रतीक हैं तथा भाषाओं में भी काफी शब्द-साम्य है। यह साम्य स्लाव भाषाओं में तो और भी अधिक है।

४३ वर्षीय प्रसिद्ध चित्रकार श्री-ग्लाजुनोव कई विश्वविख्यात राजनीतिज्ञों और फिल्म-अभिनेताओं के चित्र बना चुके हैं। उन्होंने चिली के स्व० राष्ट्रपति अलन्दे का भी चित्र बनाया था और उनकी प्रशंसा के पात्र बने थे। वे लेनिनग्राद कला अकादमी के स्नातक है उन्होंने अपना आदर्श महान लेखक दोस्तोवस्की बनाया हुआ है, जिनका 'वास्तविकता' के बारे में कहना था कि व्यक्ति की अन्तरात्मा के द्वारा सत्य का निरुपण ही वास्तविकता है। श्री इल्या ने बताया, "मैं १९६६ से विश्व के महान व्यक्तित्वों के चित्र बना रहा हूं। अपने चित्रों में मैं व्यक्ति की आत्मा का



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

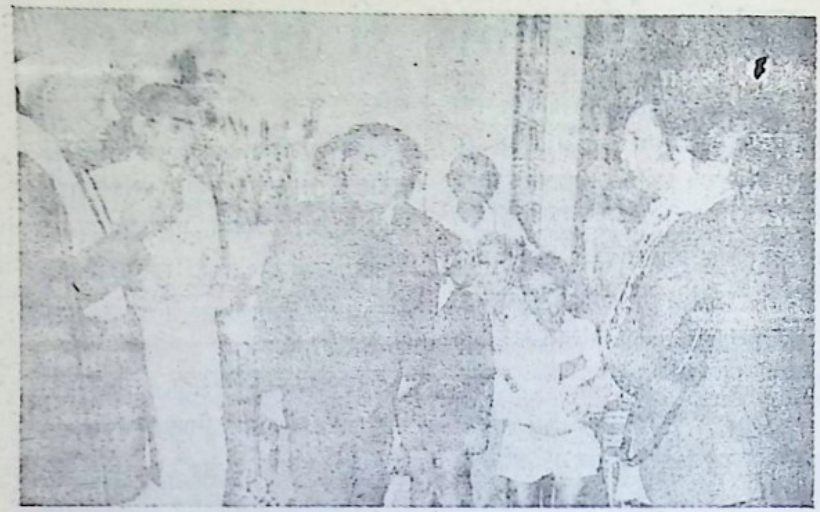

वरिष्ठ प्रगतिशील पत्रकार श्री हरिदत्त शर्मा रूसी चित्रकार दम्पती की अपने घर पर अगवानी करते हुए।

चित्रण करता हूं इसीलिये वे प्रभावशाली होते हैं। भारत आते ही मैंने श्रीमती गान्धी का चित्र बनाना शुरू कर दिया था। प्रतिदिन उन्होंने मुझे ३० मिनट का समय दिया और दस दिन में मैंने यह चित्र पूरा किया।

श्री इल्या ने कहा, मैं उनका चित्र भारत की आत्मा के रूप में बनाना चाहता हूं। मेरी इच्छा है कि पृष्ठभूमि में शुभ्र हिमालय की वृहद शृंखलाएं और वनराजि हो तथा श्रीमती गांधी के हाथ में कमल का पुष्प हो।

श्रीमती इल्या उपस्थित महिलाओं से सुहाग की निशानी चूड़ियों और बिन्दी पर बहुत देर तक बात करती रहीं। उन्होंने अपने हाथ की चूड़ियों की ओर संकेत करते हुए कहा कि मुझे भी किसी स्त्री ने चूड़ियां भेंट की हैं। जब एक महिला ने कहा कि चूड़ियां तो आपके हाथ में सज रही है और अभी जो पंडित जी ने आपके मस्तक पर लाल रोली लगाई है वह दिप रही है तो वह हंस कर बोली "मैं अपने देश में जाकर चूड़ी पहनती रहूंगी और बिन्दी लगाती रहूंगी।"

शर्मा जी के कमरे में लगा उन्हें स्वामी विवेकानन्द का चित्र भी बहुत पसन्द आया। वह स्वामी जी के व्यक्तित्व से प्रभावित हुई। फिर वह राधाकृष्ण और सीताराम के चित्रों को देखती रही। सीता के हाथों में वरमाला को देखकर भारतीय पद्धति की जानकारी लेती रहीं। चलते समय बोली : "आपके देश में प्रवास की यह सबसे सुन्दर शाम है।" उनके पति ने इसका अनुमोदन किया।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आप अपने दिल की बात अपने चाहने वालों को इस स्तम्भ के द्वारा पहुँचा सकते हैं। यह ध्यान रहे कि बात शालीनता की सीमा में हो।

—सं०

# आपकी बात

आर० के० पुरम दिल्ली से नौजवान व खूबसूरत चन्द्रकान्त लिखते हैं कि वो जब भी अपनी प्रेमिका रजनी की आंखों में आँखें डाल कर देखते हैं तो ना जाने क्यों वो आंचल में मुंह छिपाकर दूसरी ओर चली जाती हैं। चन्द्रकान्त उनकी इस आदत से बहुत परेशान थे किन्तु उन्होंने भी एक दिन छिप कर उनके मुंह छिपाने का कारण जान लिया और इस स्तम्भ के माध्यम से वो अपनी प्रेमिका तक पहुंचा रहे हैं : –

सबब खुला है अब उनके मुंह छिपाने का,
चुरा ना ले अन्दाज कोई मुस्कराने का।

माडल टाउन देहली की खूबसूरत शोख कंचन लिखती हैं कि उनके ख्वाबों के शहजादे कमल जब से लन्दन गए हैं कोई पत्र भी नहीं लिखा है। पत्र लिख लिख कर कंचन जी अब थक गई हैं वो भी इस पत्रिका के माध्यम से कमल से पूछ रही हैं कि इतनी दूर जाकर जब पत्र भी नहीं लिखते तो याद क्या करते होंगे? और कमल जी का जवाब शायद यह हो :

यादे रफ्तगां की भी हिम्मत नहीं रही,
यारों ने इतनी दूर बसायीं हैं बस्तियाँ।

शक्ति नगर दिल्ली के मकरन्द अपनी प्रेमिका चंदा से जब भी शादी की बात करते हैं वो कभी मुस्करा कर और कभी हंस कर टाल जाती हैं। मकरन्द भी धुन के पक्के निकले और एक दिन चंदा को एकान्त में रोक कर कहा कि आज जवाब दिए बिना घर नहीं जाने दूंगा। चंदा ने मुस्करा कर पल्लू छुड़ाया और ऊपर हाथ उठा कर कहा खुदा से दुआ करो मामला बन जायगा।

मकरन्द जी ने इस पर अपनी



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इस प्रिय पत्रिका के माध्यम से चंदा जी से कहा है :—

मैं बुतपरस्त भला बंदगी को क्या जानूं ?
जहां कहा तूने वहीं सर झुका लिया मैंने।
मेरा तो कुछ भी नहीं तेरी बात जाएगी,
गर दुआ के लिए हाथ उठा लिया मैंने ॥

● मेरठ से सुधीर जैन लिखते हैं कि जबसे उनकी अपनी प्रेमिका रमा से कुछ खटपट हुई है वो गुमसुम सी रहती है और एकान्त में बैठी उंगली से ना जाने क्या लिखती रहती है। एक दिन सुधीर चुपचाप पीछे जा खड़ा हुए और देखने लगे यह क्या करती रहती है। उन्हें यह देख कर बहुत ही आश्चर्य हुआ कि वह बार बार जमीन पर उन्हीं का नाम लिख कर मिटा रही थी। इस पर सुधीर जी ने यह लिख भेजा है :

अजब अदा है मुझे खाक में मिलाने की,
कि मेरा नाम जमीं पे लिखके 'यूं' मिटा देना।

---

प्रिय ! मैं तुम्हारे लिए ला सकता हूं,
इन्द्र का धनुष आसमां के सितारे
दे सकता हूं अपना 'जी'
जी ! मुझे न चाहिए इन्द्र का धनुष,
आसमां के सितारे,
न चाहिए तुम्हारा 'जी'
ला सकते हो तो ला दो
दो किलो वनस्पति घी।

मुंह में राम बगल में छुरी

पाखंडी—
(महेन्द्र तुली की एक कलाकृति)



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

# सामूहिक राशि भविष्य

**मेष**—मास का पूर्वार्ध अच्छा गुजरेगा। लाभ मार्ग प्रशस्त रहेगा। धार्मिक अभिरुचि और यात्राओं के शुभ प्रसंग प्रबल होंगे। परन्तु उत्तरार्ध सामान्य रूप से सामान्य चिंताओं में व्यतीत होगा। अधिक व्यय का शोभ यहां कई मामलों में आपको संयम ही बरतना होगा।

**वृष**—१ जून से १३ जून तक समय प्रतिकूल ही समझा जायगा। विघ्नबाधाएं उपस्थिति होती रहेगी। उलझनों में उलझोगे। चित्त वृत्ति विक्षुब्ध तरंगमयी बनी रहेगी आवश्यकीय खर्चे सम्बन्धी चिंताएं बनी रहेंगी। परन्तु उसके बाद मासांत पर्यंते सभी सोचे हुए यथासमय बनेंगे।

**कर्क**—जून मास अपूर्व सिद्धि का होगा। लाभ के मार्ग प्रशस्त रहेंगे। सामाजिक, राजनीतिक, व्यापारिक लाभ होते रहने से प्रसन्नता रहेगी। जहां आप उलझनों में उलझोगे गोचर ग्रह कोई अनिष्ट नहीं होने देंगे और आप आपसे आप आगे बढ़ते रहेंगे।

**सिंह**—मास का पूर्वार्ध सामान्य समझा जायगा। कार्यों में आशाएं होंगी और सामान्य विलम्ब भी होगा एकाध योजना ही कार्यान्वित होगी। परन्तु उत्तरार्ध सन्तोषजनक समझा जायगा। जातीय तथा सामाजिक संस्थाओं में आपके मान सम्मान होंगे।

## शनिवार १ जून से रविवार ३० जून तक

**मिथुन**—मास का पूर्वार्ध सामान्य अच्छा समझा जायगा। अनेक उपलब्धियां एवं आश्वासन मिलेंगे। आगन्तुक व्यक्तियों की सलाह से लाभ मार्ग प्रशस्त रहेगा। परन्तु उसके बाद मासांत पर्यन्त लाभ मार्ग अवरुद्ध रहेगा।

**कन्या**—मास का पूर्वार्ध सामान्य खराब है। मानसिक उद्विग्नता रहेगी। स्वास्थ्य बार बार खराब असर डालेगा। आवश्यकीय खर्चे सम्बन्धी चिंता रहेगी, पथ्य रखना। और यथेष्ट सावधानी बरतना। परन्तु उत्तरार्ध सामान्य अच्छा



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

समझा जायगा। यात्राओं के शुभ प्रसंग होंगे।

तुला—आपकी राशि का स्वामी शुक्र ग्रह एवं अन्याय गोचर के विचार से मास के उत्तरार्ध की अपेक्षा पूर्वार्ध सामान्य रूप से सामान्य अच्छा गुजरेगा। यात्राओं के प्रसंग प्रबल होंगे। हां परिवारिक उलझनों में जरूर उलझोगे जिसका मास के उत्तरार्ध में कुछ बुरा असर पड़ सकता है।

वृश्चिक—जून का महीना मिले जुले फलों का होगा। १३ जून तक तो आप निर्भीक बने रहोगे। उद्योगों में उत्साह बढ़ा रहने से समस्याएं सुलझती रहेंगी। लाभदर्शक अध्यवसाय की उन्नति के योग होंगे समीप दूर की यात्रा का शुभ प्रसंग प्रबल होगा। शत्रु क्षमा याचना करेंगे। मित्रों में आवागमन रहेगा।

धनु—मास का पूर्वार्ध नवीन आशाओं में व्यतीत होगा। बुद्धिबल से ही कार्य सफल होंगे। परन्तु उसके बाद उत्तरार्ध अनेक उपलब्धियों का अपूर्व सिद्धि प्रदान करने वाला फलदायक समझा जायगा। आश्वासन मिलने वाले कार्यों में मदद मिलेगी।

मकर—आपकी राशि का स्वामी इन दिनों आपकी राशि से छठे स्थान में फलदायक तो समझा जायगा। परन्तु गोचर की दृष्टि से मास का पूर्वार्ध सामान्य चिंताओं में ही समझा जायगा। अन्याय ग्रहों के राश्यन्तर आपको हैरान करेंगे। अतः विवादों से दूर रहना ही शुभ कदम होगा।

कुंभ—जहाँ आपकी राशि का स्वामी आपकी राशि से पंचम होने से यदा-कदा बुद्धि विपर्यास उत्पन्न करता है परन्तु जून महीने की १३ तारीख तक भुवन भास्कर पराक्रम स्थान में आपकी भरपूर मदद करते रहेंगे। मित्रों से संघर्ष और विजय लाभ मिलेगा।

मीन—आपकी राशि का स्वामी १२वें व्यग्रता बढ़ाता है और दूसरा सूर्य लाभ मार्ग में कुछ बाधाएं उपस्थित करता है। १३ जून के समय तक चिंताएं रहेंगी परन्तु ऐसी बात नहीं कि उनका समाधान न हो।

—रत्नाम्बर

---

**मनाही**

पढ़कर बोर्ड पर कि यहाँ
थूकना मना है।
उसने पिच्च से थूक दिया।

**समाजवाद**

समाजवाद में,
पहले हम।
समाज बाद में।

---



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai



# इंतकाम की भावना ने उसे दीवाना कर दिया था...

**कोलंबिया** में दो सरकारें हैं—

एक सरकार वह है जो जनता की प्रतिनिधि है और कानून के सहारे चल रही है और दूसरी सरकार वह है जिसका कोई कानून नहीं है और जिसके हाथों न किसी के प्राण सुरक्षित हैं और न इज्जत—कोलंबिया में हर सुनसान सड़क पर, हर पहाड़ी घाटी में और हर देहात में इस दूसरी सरकार का शासन है। गुंडों को खुली आजादी प्राप्त है। वे मनमानी कार्यवाहियाँ करते हैं और सरकार पूरी कोशिश के बावजूद उनका कुछ नहीं बिगाड़ सकती।

किन्तु—कुछ वर्षों पूर्व अमेरिका के केवल एक नवयुवक ने कोलंबिया के इस अन्याय से टक्कर ली और इस सरकार की नींवें हिला दीं।

राबर्ट स्काट नामक यह व्यक्ति अपनी मंगेतर के साथ कोलंबिया घूमने निकला था। उसके साथ उसकी बहन भी थी। वे एक बस में यात्रा कर रहे थे। यात्रियों से भरी हुयी यह बस पर्वतीय सड़क पर गुजर रही थी। हर यात्री प्रसन्न था। सभी प्राकृतिक दृश्यों की सुन्दरता का मनोरंजन उठा रहे थे—

स्काट भी अपनी मंगेतर से बातें कर रहा था। अचानक फायरिंग होने



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

लगी। सभी आदमी घबरा गए। ड्राइवर ने बस रोक दी, ठीक उसी क्षण एक गोली ने उसकी छाती में एक बड़ा सा छेद कर दिया। बस के टायर फट चुके थे। फायरिंग अब भी जारी थी।

थोड़ी देर पश्चात् झाड़ियों से से कुछ लोग निकले। ये सब सशस्त्र थे—इन आक्रमणकारियों ने बस को चारों ओर से घेर लिया—स्त्रियों से

—अब्दुल गफ्फार छीपा

बलात्कार आरंभ कर दिया पुरुषों को गोली मार दी सभी सामान लूट लिया और बस में आग लगा दी।

यही नहीं हुआ—अभागी स्त्रियों को कपड़े उतार कर नंगा नाचने के लिए बाध्य किया गया और जब वे थक गयीं तो उनको भी गोली मार दी गयी। मरने वालों में स्काट की मंगेतर भी थी और उसकी बहन भी। स्काट ने यह सारा तमाशा देखा था क्योंकि वह मरा नहीं था।

दो घन्टे पश्चात् आक्रमणकारी उन ही झाड़ियों में गायब हो गये।

स्काट सख्त जख्मी हालत में कई घन्टे तक धरती पर पड़ा रहा। उसमें हिलने तक की शक्ति न थी। बाद में यात्रियों से भरी हुई एक और बस आयी और उसे निकटतम अस्पताल पहुंचा दिया गया—पुलिस ने उसका बयान लिया। पूरी दास्तान सुनी। उसके घाव भरने लगे किन्तु जो घाव उसके कलेजे में लगा था उसका भरना असंभव था।

दो माह पश्चात् वह स्वदेश लौटा तो उसने यह महसूस किया कि उसकी रातों की नींद गायब हो चुकी है उसके दिल को किसी पहलू चैन नहीं मिल रहा है—अन्त में सोचते-सोचते वह एक अन्तिम नतीजे पर पहुंच गया उसने सोचा, "अन्याय का मुकाबला अन्याय से ही किया जा सकता है।"

स्काट ने अपने कुछ नवयुवक मित्रों से विचार विमर्श किया—एक बाकायदा संगठन बना और केवल तीन मास पश्चात् यह टोली एक बस किराये पर लेकर सैलानियों के रूप में कोलंबिया की ओर रवाना हो गयी। बस उसी मार्ग पर जा रही थी जिस पर स्काट की बस को लूटा गया था।

किंतु रास्ता खत्म हो गया—स्काट की बस को नहीं रोका गया। यह एक इत्तफाक था कि इस बार उनका सामना गुंडों और लुटेरों की किसी टोली से नहीं हुआ।

स्काट ने फिर भी साहस न छोड़ा, उसने दुबारा यात्रा आरम्भ की।

स्काट ग़म की हालत में बिलकुल



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दीवाना हो चुका था। मैक्सिको के के गुंडों से बदला लेने के लिए उसकी दीवानगी इतनी बढ़ चुकी थी कि वह एक क्षण के लिए भी आराम करना नहीं चाहता था। वह लगातार यात्रा करता रहा।

उसके साथी भी उन गुंडों से मुकाबला करने के लिए बेचैन थे। वे पूर्णतया सशस्त्र थे—मैक्सिको के गुंडों का सामना अब तक के निहत्थे यात्रियों से पड़ा था किंतु इस बार उनका मुकाबला सशस्त्र नवयुवकों से होने वाला था जो पूर्ण रूप से सचेत भी थे।

अचानक एक पहाड़ी सड़क पर गुंडों की एक टोली ने बस को घेर लिया किंतु स्काट और उसके साथियों ने उन गुंडों को जरा भी मोहलत न दी। मशीनगनों और दस्ती बमों की वर्षा ने सभी गुंडों का पलक झपकते में खात्मा कर दिया।

छः मास तक स्काट और उसके साथी मैक्सिको के गैर आबाद और सुनसान रास्तों पर घूमते रहे। और गुंडों का सफाया होता रहा। इस अभियान में स्काट के आठ साथी भी मारे गये थे।

अब मैक्सिको की सरकार भी स्काट के अभियान का साथ दे रही थी।

किंतु अभी तक स्काट के मन को शान्ति नहीं मिली थी। गुंडों और लुटेरों का वह ग्रुप इसको अभी तक नहीं मिला था जिसने उसकी बहन की हत्या की थी। वह बड़ी बेचैनी से उस गिरोह को तलाश कर रहा था।

धीरे धीरे स्काट के अभियान के समाचार चूंकि देश में फैल चुके थे इसलिए अब गुंडे भी सचेत हो गए थे। उन्होंने अपनी गतिविधियाँ एक बहुत बड़ी हद तक कम कर दी थी। और वे भी सचेत हो गए थे। किंतु जब किसी गिरोह का धंधा ही लूटमार और डकैती हो तो प्रत्यक्ष है कि वह अधिक दिन तक न खामोश रह सकता था और न स्काट की वापसी की प्रतीक्षा कर सकता था।

अंततः वह दिन आ गया जब स्काट की बस को उन गुंडों ने घेर लिया जिनकी स्काट को तलाश थी—आशा के विपरीत स्काट ने उन गुंडों पर फायरिंग नहीं करायी, बल्कि उनसे हथियार रखवा लिए और फिर उनको एक लाइन में खड़ा होने पर बाध्य कर दिया।

गुंडे हैरान होकर सोच रहे थे कि ये सशस्त्र यात्री इनके साथ क्या व्यवहार करना चाहते हैं। स्काट ने भी उनको अधिक देर तक उलझन में नहीं रखा। इसने उनको महीनों पहले की एक दास्तान याद दिलायी

(शेष पृष्ठ ४० पर)



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai



# क्या आपका बच्चा डरपोक है ?

**शायद** आपने नोट किया होगा कि कई बच्चे कहीं भी अंधेरे में या अकेली जगह में जाने से कतराते हैं। बहुत बार यह डर इतना बढ़ जाता है कि यदि मां रसोईघर में काम करती हो तो बच्चा बगल के कमरे में भी अकेला नहीं बैठ सकता। इस प्रकार बच्चे अपने भावी जीवन में भी इसी प्रकार की मनोवृत्ति का शिकार रहते हैं उनमें जीवन में अग्रणी रह कर किसी काम को करने का हौसला समाप्त हो जाता है। बच्चों में इस भय अथवा डर की प्रवृति को काफी हद तक दूर करने में मां-बाप सहायक सिद्ध हो सकते हैं।

बच्चे में भय मातायें स्वयं पनपाती हैं। वे बच्चे की जिद रोकने के उसे भूत अथवा बच्चे उठाने वाले डाकू की कहानी सुना कर उस क्षण तो वे सफलता अवश्य पा जाती हैं पर बच्चे में जो इस प्रकार वे डर बैठा देती हैं उसके प्रभाव से वे अक्सर नावाकिफ रहती हैं। यदि बच्चे के अभिभावक बच्चे की इच्छा व रुचि को समझकर उसके साथ व्यवहार करें तो निश्चित रूप से बच्चे में आत्मविश्वास व सही बात के लिए



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उचित साहस पैदा होगा।

बच्चों के अन्दर पायी जाने वाली भय की स्थिति के कारणों का पता लगाने के लिए हाल ही में लास एंजेल्स के चिकित्सा और बाल क्रिया-कलाप कार्यक्रम के विशेषज्ञों ने ४ वर्ष से १४ वर्ष तक की आयु के कुछ बालक-बालिकाओं तथा उनकी माताओं का अध्ययन किया। माताओं का अध्ययन इसलिये आवश्यक था क्योंकि बच्चों में मातृदत्त गुण अधिक पाये जाते हैं। इन विशेषज्ञों के अनुसंधान के अनुसार जो अभिभावक अपने बच्चों की जिज्ञासा अथवा आशंका का पूर्णरूप से स्पष्टीकरण नहीं करते। उनके बच्चे अधिकांशया डरपोक होते हैं। इसके विपरीत वे बच्चे जिनकी जिज्ञासा का सही तरीके से पूरी तरह विस्तार के साथ स्पष्टीकरण कर दिया जाता है, कम भयभीत होते हैं।

हमारे देश में अशिक्षा या किन्ही अन्य कारणों के प्रभाव से बच्चे के मनोविज्ञान को समझने में माता में अथवा उनके पिता रुचि नहीं लेते। वे बच्चे को लालच या भय से ही काबू करने का सिद्धान्त अपनाते हैं। अक्सर हम देखते हैं कि बच्चे को मिठाई या खिलौने का लालच देकर अथवा अच्छे-अच्छे कपड़े बनवाने का दिलासा देकर अपना काम सिद्ध कर कर लेते हैं और बाद में उस लालच अथवा दिलासे को अक्सर पूरा नहीं करते इसके विपरीत डाक्टर के इंजक्शन की सुई अथवा, अन्य डराने वाली चीजों के द्वारा बच्चे पर नियंत्रण करना भी हानिकर है।

कई बार यह भी देखने ने आता है कि मां-बाप यह समझ लेते हैं कि बच्चे की किही गलतियों अथवा बुरी आदतों का वर्णन गैर व्यक्तियों अथवा मेहमानों के सामने करके उसकी बेइज्जती के द्वारा उसमें सुधार ला सकते हैं। परन्तु अक्सर इस प्रकार के माँ बापों के बच्चे प्रायः ढ़ीठ अथवा जिद्दी ही पाये गये हैं।

एक आदमी ने अपने मित्र से अफसोस प्रकट करते हुए कहा, "तुम्हारे चाचा की असामयिक मृत्यु पर मुझे दुख है। क्या मरते वक्त वे होशोहवास में थे।"

"यह तो उनका वसीयतनामा देखने पर ही पता चलेगा।" मित्र ने उदास होकर कहा।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

## १८ फरवरी—कहानी

(पृष्ठ १६ का अवशिष्ट)

"मैं आपको ही बुलाना चाहती थी, मुझे आपसे बहुत ही आवश्यक काम है। क्या आप मेरी कुछ सहायता कर सकेंगे, मैं शायद अब नहीं बच सकूंगी," उसके शब्द टूट-टूटकर बाहर आ रहे थे ···उसने अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए कहा····· "मैं अब नहीं बच सकूंगी, परन्तु उनको मेरा पत्र प्रतिदिन ही मिलना चाहिये·····उन्होंने कहा था····· यदि ऐसा न हुआ तो वह बीच ही में पढ़ाई छोड़ कर आ जायेंगे·· उनकी उन्नति बीच में ही रह जायेगी ····· डाक्टर मेरी सहायता कीजिये प्लीज और उसने कांपते हाथों से बहुत से पत्रों का पुलन्दा मेरी ओर बढ़ा दिया उनको रोज एक पत्र डाल दिया करना। उसने बुझती-बुझती आवाज में कहा था। और उसी रात हजारों कोशिश के बावजूद भी हम उसको नहीं बचा सके।"

अवनीत का सारा शरीर पसीने से भीग गया था, वह आँखें फाड़े डाक्टर की ओर देख रहा था, हाथ से उपहार वाला डिब्बा छूट कर जमीन पर गिर गया था, और उसमें झाँक रही थी, एक बेबस इन्सान के, गाढ़े गाढ़े खून से रंगी वह लाल साड़ी।

## अपराध कथा

(पृष्ठ ३७ का अवशिष्ट)

और इससे पहले कि वे इससे दया की भीख मांगते इन सब की हत्या कर दी।

और अब जैसे स्काट को करार आ गया था।

मैक्सिको की सरकार ने उसको पुरस्कार देना चाहा किंतु स्काट ने कहा "मैंने अपना फर्ज अदा किया है।" और वह मैक्सिको से वापस चला आया।

किंतु बदनसीबी स्काट का भाग्य बन चुकी थी क्योंकि कुछ ही माह पश्चात् वह पागल हो चुका था।

एक युवक ने अपनी प्रेमिका से पूछा,- "क्या इस समय तुम्हारे पिताजी से बात करना ठीक रहेगा ?"

"हाँ उन्होंने अपने जूते उतार कर पलंग के नीचे रख दिए हैं," प्रेमिका ने कहा।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

एक महत्वपूर्ण लेख

# सोवियत समाचार-पत्रों की भूमिका

समाजवाद तथा साम्यवाद के विरोधी अक्सर ,यह भ्रामक प्रचार करते हैं कि इन प्रणालियों के अन्तर्गत विचारों की अभिव्यक्ति की बिल्कुल स्वतंत्रता नहीं होती। वहां समाचारपत्र निष्पक्ष व निर्भीक न हो कर केवल तानाशाही सरकार के ही गुणगान करते हैं इस लेख में बताया गया है कि विश्व के महानतम समाजवादी देश सोवियत संघ में समाचारपत्रों व पत्रकारों की स्थिति एक सजग प्रहरी जैसी है। सम्पूर्ण समाज के हितों की रक्षा उनका पुनीत कर्त्तव्य है। लेखक श्री ओझा स्वयं एक वरिष्ठ पत्रकार हैं ।, संप्रति में वे नई दिल्ली स्थित सोवियत सूचना केन्द्र के प्रधान हैं।

— सम्पादक

**जनवाद** की रक्षा और उसके उन्नयन तथा नव-निर्माण के क्षेत्र में अपनी सजग भूमिका अदा करने एवं क्रान्तिकारी चेतना पैदा करने की दृष्टि से पत्रकारिता के इतिहास में समाजवादी पत्रों का अपना विशिष्ट स्थान है। प्रगतिशील विचारों के समर्थक एव प्रचारक तथा वास्तविक लोकमत को अभिव्यक्त एवं संगठित करने वाले प्रगतिशील पत्रों का अस्तित्व ऐतिहासिक महत्व माना गया है। जन-संस्कृति के विकास में भी इनकी प्रभावकारी भूमिका स्वीकार की जाती है।

सोवियत पत्रकारिता के इतिहास पर दृष्टिपात करते ही यह तथ्य उभरकर सामने आता है कि समाजवादी जीवन के अत्यन्त नाजुक समय में शत्रुओं से समाजवादी व्यवस्था की रक्षा, विश्व-बन्धुत्व की भावना के प्रसार, शान्ति एवं प्रगति के आदर्शों के पोषण और मानवतावादी नूतन सभ्यता के विकास में सोवियत समाचारपत्रों का योगदान विशेषरूप से से उल्लेखनीय रहा है। प्रचार के अन्य साधनों के साथ सोवियत समाचारपत्र सोवियत जनता की



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

राजनीतिक और सांस्कृतिक शिक्षा में एक अच्छे शिक्षक का पार्ट अदा करते रहे हैं। यदि सोवियत संघ की बहुमुखी प्रगति में सोवियत समाचारपत्रों के योगदान का वस्तुपरक मूल्यांकन किया जाये तो इस सत्य को स्वीकार करना होगा कि सोवियत समाचारपत्रों ने अपने सामाजिक दायित्व के पालन में विश्व के पत्रोद्योग के सम्मुख एक अनुकरणीय आदर्श प्रस्तुत किया है।

सोवियत पत्रकारों की आर्थिक स्थिति बहुत ही प्रेरणाप्रद और उनका जीवनस्तर बहुत ऊंचा है। पिछले दो दशकों में सोवियत पत्रों की रूप-सज्जा में भी क्रान्तिकारी परिवर्तन हुआ है और मेकअप की दृष्टि से भी वे एक आदर्श माने जा सकते हैं। सोवियत समाज के साथ सोवियत पत्रकारिता का विकास होता रहा है और सोवियत पत्रों को अभूतपूर्व लोकप्रियता प्राप्त है, क्योंकि उनसे लोकवाणी प्रतिध्वनित होती है।

## प्रगतिशील पत्रकारिता के जनक लेनिन

सोवियत राज्य के संस्थापक लेनिन समाचारपत्र को कितना महत्व देते थे यह इसी बात से प्रकट होता है कि क्रान्तिकारी मजदूर पार्टी के संगठन, नेतृत्व और पथप्रदर्शन के लिए उन्होंने प्रथम कदम के रूप में समाचारपत्र के प्रकाशन की ओर अपने साथियों का ध्यान आकृष्ट किया था। लेनिन द्वारा स्थापित 'ईस्क्रा' का प्रकाशन १९०० के दिसम्बर में शुरू हुआ। यह विदेश में गुप्त रूप से छपता था और इसे छिपे ढंग से रूस में वितरित करने के लिये पहुंचाया जाता था। इस पत्र में जीवन के सभी पहलुओं के बारे में चर्चा होती थी और यह जुझारू अखबार मजदूरों की क्रान्तिकारी शिक्षा के लिये एक स्कूल बन गया। इस पत्र के योगदान से रूस के सामाजिक जनवादी आन्दोलन में सैद्धान्तिक और संगठनात्मक एकता कायम हुई। 'ईस्क्रा' की भाँति लेनिन की पहलकदमी पर स्थापित मजदूरों के समाचारपत्र 'प्राव्दा' (सत्य) ने क्रान्तिकारी उभार को लाने में ऐतिहासिक भूमिका अदा की। इस पत्र का प्रथम अंक ५ मई, १९१२ को प्रकाशित हुआ था। यह पत्र संघर्षरत सर्वहारा-वर्ग का प्राण था और है। कम्युनिष्ट पार्टी के जीवन में 'प्राव्दा' का स्थान मुख्य रहा है। यह सोवियत कम्युनिष्ट पार्टी का मुख पत्र है।

## 'प्राव्दा' : नये समाज का सत्य

'प्राव्दा' नये समाज के निर्माताओं का समाचारपत्र हैं। इसमें



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

केवल सुरुचिपूर्ण सामग्री प्रकाशित होती है। सनसनीखेज खबरें प्रकाशित करने की दूषित पत्रकारिता की गैर-जनवादी परम्परा से न केवल यह पत्र बल्कि सभी सोवियत समाचारपत्र मुक्त है। अपराध और सेक्स सम्बन्धी खबरों से सोवियत पत्रों के कालमों को नहीं भरा जाता। इसमें पाठकों को राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय घटनाओं, आर्थिक और सांस्कृतिक क्षेत्र की उपलब्धियों तथा विविध समस्याओं के बारे में स्पष्ट जानकारी प्राप्त होती है। आलोचना का स्तर ऊंचा है। सभी सोवियत जनतंत्रों का प्रतिनिधित्व करने का इसे श्रेय प्राप्त है। इस पत्र की ९६ लाख प्रतियां छपती हैं। इस पत्र में बड़ी सावधानी से सामग्री का चयन किया जाता है और भिन्न-भिन्न रुचियों को सन्तुष्ट का प्रयास भी सराहनीय है। इस पत्र की अन्य विशेषताओं के अतिरिक्त एक मुख्य विशेषता यह है कि इसके कालमों में श्रम के चमत्कार को प्रमुख स्थान दिया जाता है। "समस्याओं और निर्णयों" के स्तम्भ के अन्तर्गत सामाजिक जीवन के विभिन्न पहलुओं के ऊपर खुली बहस की सुविधा इसके जनवादी स्वरूप का ज्वलंत उदाहरण है। 'प्राव्दा' के पिछले ६२ वर्षों का इतिहास सोवियत जनगण के संघर्ष और उपलब्धियों का इतिहास हैं। यह पत्र इतिहास का निर्माता और नये जीवन का सृष्टा है। इस दृष्टि से दुनिया का शायद ही कोई पत्र इसका मुकाबला कर सके।

## रूस में ८७०० पत्र-पत्रिकायें छपती हैं।

सोवियत संघ के ५८ सोवियत भाषाओं तथा ८ विदेशी भाषाओं में ८,७०० दैनिक तथा साप्ताहिक पत्र प्रकाशित होते हैं जिनकी कुल प्रसार संख्या १५ करोड़ है। संसार में अखबारों के पाठकों के अनुपात की दृष्टि से दुनिया में सोवियत संघ को अग्रणी स्थान प्राप्त है। प्रचार के अतिरिक्त विविधता भी सोवियत पत्रकारिता की विशिष्टता है। ६ हजार मासिक तथा अन्य पत्रिकायें ४८ सोवियत भाषाओं और २५ विदेशी भाषाओं में छपती हैं। सोवियत समाचार पत्र तथा पत्रिकायें राज्य अथवा सार्वजनिक संगठनों द्वारा प्रकाशित होती हैं। 'प्राव्दा' के अतिरिक्त अन्य मुख्य पत्रों में 'इज्वेस्तिया' का प्रचार ८४ लाख प्रतियां, 'कोम्सोमोल्स्काया प्राव्दा' का प्रचार ८४ लाख प्रतियां, 'पाइनियरस्काया प्राव्दा' की ५८ लाख प्रतियां तथा 'त्रुद' की ६ लाख प्रतियां और 'सेल्स्कायाजिजिन' की ७० लाख प्रतियां छपती हैं। फौजी समाचारपत्र 'लाल तारा' की भूमिका सोवियत राज्य तथा समाजवादी व्यवस्था की



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

रक्षा की दृष्टि से विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। लेखक संघ की ओर से, 'नोवी मीर', 'ओवत्यावर' और 'जनाम्या' जैसी सांस्कृतिक पत्रिकायें निकलती हैं। इनके अतिरिक्त सोवियत संघ के अनेक अखबारों और पत्रिकाओं की ग्राहक संख्या १० लाख से अधिक है। कम्युनिस्ट पार्टी के सैद्धान्तिक पत्र कम्युनिस्ट और सामाजिक, राजनीतिक एवं साहित्यिक साप्ताहिक 'ओगोन्योक' बहुत ही लोकप्रिय है। महिलाओं की पत्रिका 'रोबोलित्सा' और 'क्रेस्त्यान्का' महिला-जगत में काफी लोकप्रिय हैं। अध्यापकों, सार्वजनिक सेवा के कर्मियों, किसानों, ट्रेड 'यूनियनो के कार्यकर्ताओं आदि के लिये विशेष पत्र हैं। इसी प्रकार बच्चों, किशोरों और युवकों के लिये तथा खेलकूद सम्बन्धी समाचारपत्रों की लाखों प्रतियां प्रकाशित होती हैं। सोवियत पत्र-पत्रिकाओं की इस बिक्री से सोवियत जनता के सांस्कृतिक विकास का परिचय प्राप्त होता है।

सांस्कृतिक दृष्टि से समाजवादी व्यवस्था की श्रेष्ठता इस बात से अभिव्यक्त होती है कि जहां क्रान्ति के पहले १९१३ में आबादी के प्रत्येक १०० व्यक्तियों में केवल २ अखबार और ६२ पुस्तकों की खपत होती थी, वहीं अब प्रत्येक १०० सोवियत नागरिकों में समाचार पत्रों की करीब ६० एवं पत्रिकाओं की लगभग ७५ प्रतियां और ६०० पुस्तकें खप जाती जाती हैं। ब्रिटेन में आबादी के प्रति १०० व्यक्तियों में समाचारपत्रों के केवल लगभग ५० प्रतियां और अमरीका में केवल ३३ प्रतियां बिकती हैं। बोल्शेविक क्रान्ति के पर्व मध्य एशिया और कजाखस्तान के ९५ प्रतिशत लोग निरक्षर थे और सरकारी रूसी पत्रिका 'वेस्तनिक प्रोस्वेश्चिनिया' ने १९०६ में लिखा था, 'मध्य एशिया और कजाखस्तान से निरक्षरता को मिटाने में ४,६०० वर्ष जरूर लग जायेंगे।" किन्तु सोवियत सत्ता स्थापित होने के फलस्वरूप अल्प समय में निरक्षरता के उन्मूलन से अब मध्य एशियाई जनतंत्रों में अमूल परिवर्तन हो गया है। उदाहरणार्थ, उज्बेकिस्तान से प्रकाशित होने वाले विभिन्न प्रकार के १२४ पत्र-पत्रिकाओं की ४५ लाख प्रतियां और २२५ समाचारपत्रों की ३७ लाख प्रतियाँ प्रकाशित होती है। कजाखस्तान से ३६१ अखबारों की ४० लाख से अधिक प्रतियां छपती हैं तथा १५९ पत्रिकाओं की २७ लाख प्रतियां बिकती हैं। ताजिकिस्तान के ६० समाचारपत्रों की ९ लाख ५८ हजार प्रतियां तथा ४२ पत्रिकाओं की ४ लाख ६० हजार प्रतियाँ छपती हैं। ये आंकड़े इसी बात के द्योतक हैं कि समाजवादी व्यवस्था के अन्तर्गत



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सांस्कृतिक साधनों का विकास बहुत ही तेजी से होता है। सभी जनतंत्रों से पत्र-पत्रिकाएं प्रकाशित होती हैं।

सोवियत समाचारपत्र मुनाफे की भावना से नहीं प्रकाशित होते। राज्य और सार्वजनिक संस्थाओं की ओर से विभिन्न वय के लोगों के अतिरिक्त संस्कृति, कला, खेलकूद, इंजीनियरी, उद्योग-निर्माण, यातायात और कृषि से सम्बन्धित पत्र-पत्रिकायें प्रकाशित होती हैं।

सोवियत संघ में समाजवाद के निर्माण की मंजिल को फतह कर लेने के फलस्वरूप शहरों और गांवों की खाई पाटने की दिशा में हो रहे प्रयास से ग्रामीण अंचलों में भी लोग प्रतिदिन चाव से पत्र-पत्रिकाओं को पढ़ कर देश-विदेश की जानकारी प्राप्त करते हैं। नगरों की भांति गांवों में भी संवाददाताओं का जाल बिछा हुआ है। समाचारपत्र और पत्रिकायें पाठकों से घनिष्ठ सम्बन्ध कायम रखती हैं। संवाददाताओं में मजदूरों और किसानों की भी संख्या काफी बड़ी है।

सोवियत संघ में खबरों के छपने के बारे में सम्पादकीय मंडल को पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त है। वहाँ प्रेस सेन्सर की कोई व्यवस्था नहीं है।

## दो संवाद समितियां

सोवियत संघ में 'ताम' और 'नोवोस्ती' नामक दो संवाद समितियां हैं। तास सरकारी संवाद समिति है। नोवोस्ती के संचालकों में सोवियत पत्रकार संघ, सोवियत लेखक-संघ, सोवियत विज्ञान अकादमी के साथ ही शिक्षाशास्त्री, कलाकार, कवि, संगीतज्ञ, फिल्म-निर्माता आदि शामिल हैं। यह एजेंसी समाचार के अतिरिक्त मुख्यतः लेख, फीचर आदि प्रसारित करती है। विभिन्न देशों में सोवियत सूचना सेवाओं द्वारा प्रकाशित पत्र-पत्रिकाओं के सम्पादन और प्रकाशन का दायित्व भी यह एजेंसी सफलतापूर्वक निभा रही है। इसने संसार के कोन-कोने में सोवियत-सांस्कृतिक जीवन की उपलब्धियों को प्रस्तुत करने में उल्लेखनीय सफलता हासिल की है। इन दोनों एजेंसियों के साथ विश्व की अन्य संवाद समितियों एवं फीचर एजेंसियों से समझौते हैं।

सोवियत पत्रकारिता के विकास में सोवियत पत्रकार संघ की भूमिका उल्लेखनीय है। यह संगठन सोवियत पत्रकारों की पेशे-सम्बन्धी समस्याओं पर गौर करता है और अन्तर्राष्ट्रीय पत्रकार संगठनों से सम्बन्ध कायम करके उनसे सहयोग करता है। भारतीय श्रमजीवी पत्रकार संघ के साथ इसने मित्रता और सहयोग का समझौता करके अपने अन्तर्राष्ट्रीयतावादी दृष्टिकोण का परिचय दिया है।

—राजवल्लभ ओझा



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

# सांचे

—प्रमोद शर्मा

बस्ती
या
कूड़ाघर
जहाँ कूड़े के ढेर
यहां-वहाँ-तहाँ
सब जगह फैले हुए हैं।
बदबू इतनी कि,
सांस छटने लगी
गंदगी से महामारी
सर्वत्र छाने लगी।
एक के बाद एक
कितनी लाशें,
फुट पाथों पर सड़ती हैं
और ऊपर वाली खिड़की
कूड़ा फेंक खिड़की बंद हो जाती है।
ये सींखचों के पीछे खड़ा कौन,
चिल्ला रहा है,
न जाने कौन से शब्द कोश के
शब्दों का उच्चारण करता है।
चिकित्सक स्वयं रोग ग्रसित होकर
रोग शैय्या पर लेट गये।
महामारी रुकेगी नहीं
लाशों के ढेर बढ़ते जायेंगे,
गिद्ध और कौवे बड़े चाव से,
शरीर के मांस को नोच-नोच कर खायेंगे।
ये कैसा जाम से जाम टकराया,
और एक बेबाक कहकहा उभर गया।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

# आपका निजी पृष्ठ

आप अपनी बिल्कुल निजी समस्यायें सुलझाने के लिए हमें भेज सकते हैं। इन पृष्ठों पर इनका समाधान करेंगी 'अनामिका दीदी'। पूरा नाम व पता लिखना आवश्यक है, किन्तु यदि आप प्रकाशित न कराना चाहें तो इस विषय में निर्देश, अलग से दे दें। लिफाफे के एक कोने पर 'आपका निजी पृष्ठ' लिखना जरूरी है।

—सम्पादक

ब० ना० देवी, कानपुर।

● दीदी, मेरे विवाह को अभी कुछ ही माह हुए हैं। विवाह से पहले मैं कालिज में एक युवक से प्यार करती थी, मेरे कुछ पत्र व चित्र भी उस युवक के पास हैं। विवाह के बाद मुझे पता चला कि वह युवक दूर के रिश्ते में अब मेरा देवर लगता है। वह युवक भी अब मुझसे अनुचित लाभ उठाना चाहता है, मेरे पति की अनुपस्थिति में अक्सर चला आता है और पत्रों और चित्रों को मेरे पति को दिखाने को कहता हैं। मैंने अब तक उसकी बात नहीं मानी है किन्तु डरती हूं यदि मेरे पति को इस विषय में पता चल गया तो मेरा जीवन नष्ट जायेगा। मैं इस युवक से भी पीछा छुड़ाना चाहती हूं। मेरी कुछ समझ में नहीं आता क्या करूं ?

● बहन, आपकी समस्या कोई नयी नहीं है। आजकल के युवक युवतियों में विवाह से पूर्व प्रेम एक फैशन बन गया है जिसके दुष्परिणाम इसी प्रकार सामने आते हैं। खैर, अब तुम उस युवक से स्पष्ट कह दो कि विवाह के बाद किसी अन्य युवक के विषय में तुम्हारे लिए सोचना भी पाप है अतः अपने मन से वह तुम्हें पाने का ख्याल निकाल ही दे। यदि समझाने से वह नहीं मानता तो सभी बातें साफ साफ अपने पति को बता दें। तुम्हारी स्पष्टवादिता व साफ बातें सुनकर वह अवश्य ही तुम्हें माफ कर देंगे व उस युवक से भी तुम्हारा पीछा छूट जायेगा।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation Chennai

राजमार्ग, दिल्ली।

मेरी आयु १५ वर्ष है किन्तु मुझे अपने पड़ौस में रहने वाले एक व्यक्ति से प्यार हो गया है, जो विवाहित तो है ही उम्र में भी मुझसे काफी बड़ा है। किन्तु मुझे लगता है कि उसके बिना मेरा जीवन ही व्यर्थ है—बताइये मैं क्या करूं ?

मेरी छोटी बहन, यह जीवन कोरी भावुकता व स्वप्नों का ही नाम नहीं है बल्कि कटु वास्तविकताओं व चुनौतियों का नाम ही जीवन है। क्या तुमने कभी वास्तविकता के कठोर धरातल पर उतर कर इस विषय में सोचा है ? इस उम्र में जो प्रेम का अनुभव होता है उसे हम केवल शारीरिक आकर्षण भी कह सकते हैं। अभी तुम्हारा मस्तिष्क इतना परिपक्व नहीं है कि तुम भली प्रकार यह सोच भी सको कि जिस युवक को तुम अपना जीवन सौंपना चाह रही हो वह इस दायित्व को निभाने के लायक भी है या नहीं। सामाजिक व पारिवारिक बन्धन इस बात की इजाजत उसे देते हैं या नहीं ? तुम अभी प्रेम-मुहब्बत का चक्कर छोड़ कर पढ़ाई की ओर ध्यान लगाओ, जीवन इतनी सस्ती वस्तु नहीं है जिसे तुम बिना सोचे समझे किसी को भी सौंप दो।

कुरुक्षेत्र, दिल्ली।

दीदी, हमारे पड़ौस में कुछ लड़के रहते हैं जो सभी मुझे चाहते हैं, कई बार मुझे भी लगता है कि मैं भी उन सभी से प्रेम करती हूं मैं इस इस विषय में सही लड़के का चयन करने में अपने को असमर्थ पाती हूं। यह समस्या हर वक्त मुझे परेशान रखती है—

तुम्हारी फिलोसफी पढ़कर, दिव्या मुझे सचमुच हंसी आ रही है। कितनी भोली हो तुम। क्या तुम्हें यह भी नहीं पता कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और उसे जीवन में समाज द्वारा बनाए गए नियमों का ध्यान रखना आवश्यक है। प्रेम का चक्कर वह भी कई लड़कों से क्या उचित है ? खैर अब तुम इस विषय में सोचना बिल्कुल बन्द कर दो, मन लगा कर पढ़ाई करो। फिर भी यदि इस रोग से पीछा ना छूटे तो अपनी बहन या किसी अन्य से अपने माता-पिता को कहलवा दो कि वे अब तुम्हारी शादी कर दें।

—'अनामिका दीदी'



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

# सुप्रसिद्ध प्रगतिशील पत्रकार श्री हरिदत्त शर्मा द्वारा लिखित

## कुछ पठनीय व मननीय ग्रंथ

| | | | |
|---|---|---|---|
| १. | लेनिन : भारत के संदर्भ में | ... | १० ०० |
| २. | सूर्योदय के देश में | ... | १० ०० |
| ३. | संस्कृति और समाजवाद | ... | ६ ०० |
| ४. | राष्ट्रीय अनुशासन | ... | ६ ०० |
| ५. | भारत का भविष्य | ... | २ ५० |
| ६. | महात्मा गांधी और राष्ट्रीय एकता | ... | ६ ०० |
| ७. | हम भी गये मेले में | ... | ६ ०० |
| ८. | जापान देश और निवासी | ... | ३ ०० |
| ९. | यह बस्ती यह लोग | ... | ४ ०० |
| १०. | नेहरू और नयी पीढ़ी | ... | ४ ५० |
| ११. | इन्दिरा गांधी : विश्व के संदर्भ में | ... | १० ०० |
| १२. | उत्तर प्रदेश | ... | २ ०० |

प्राप्ति स्थान :

सहयोग प्रकाशन

२१/१, शक्ति नगर, दिल्ली–७.

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai



हरिदत्त शर्मा २१/१ शक्ति नगर (२२३६५१)

# इस अंक में . . .

★ युवा वर्ग में व्याप्त असंतोष, क्षोभ या आक्रोश दिल्ली विश्वविद्यालय के छात्रों से परिचर्चा।

★ मानस चतुश्शती के अवसर पर 'रुसी राधा' का विशेष लेख।

★ फिल्म अभिनेता जलाल आगा अपने विवाह के बारे में क्या सोचता है ... ... ...
जलाल से एक अंतरंग भेंट।

★ एक सरकार ऐसी भी होती है जिसके राज्य में न किसी की जान सुरक्षित है, न धन संपत्ति ... ... ...
अमेरिका के एक राज्य में घटित सत्य अपराध कथा।

★ श्रीमती इन्दिरा गांधी का चित्र बनाने के लिए आये रुसी चित्रकार से विशेष भेंट।

मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक नीरजकुमार शर्मा द्वारा सर्वोदय प्रेस, किशन गंज, दिल्ली में मुद्रित एवं २१/१, शक्ति नगर, दिल्ली-७ से प्रकाशित। केवल आवरण सिद्ध आर्ट प्रिंटर्स, ३३०६, आर्य पुरा, दिल्ली-७

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi